द्वितीय अध्याय

"भीष्म साहनी के नाट्य-साहित्य का परिचय"

द्वितीय अध्याय

"भीष्म साहनी के नाट्य–साहित्य का परिचय

2.1 हानूश––

हिन्दी साहित्य में भीष्म साहनी का 'हानूश' नाटक के जरिए एक नाटककार के रूप में आगमन हुआ । 'हानूश' नाटक पहली बार ई.स.1977 में प्रकाशित और उसी साल मंचित हुआ । 'हानूश' नामक सामान्य कुफ़्लसाज़ द्वारा 17–18 वर्षों के परिश्रम के बाद देश की पहली घड़ी बनाया जाना, तत्कालीन बादशाह द्वारा पुरस्कारस्वरूप उसे दरबारीपद और अंधापन मिलना ,जेकब के पलायन के कारण घड़ी का भेद जिन्दा रहना 'हानूश' नाटक की मुख्य कथावस्तु है, जो चेक लोककथा पर आधृत होने के कारण प्रख्यात है । लेकिन नाटककार ने इसमें काल्पनिक घटना–विन्यास के अनुरूप उपयुक्त पात्रों का निर्माण कर, मध्ययुगीन परिवेश में सारी कथा को सँवारा है, इसलिए प्रख्यात कथावस्तु में कल्पना तत्व का सुन्दर मेल होने के कारण 'हानूश' की कथावस्तु 'मिश्र' हैं । 'जेकब' की कथा गौण या सहायक कथा है , जो 'पताका' प्रकार की है, क्योंकि वह 'हानूश' की कथा के साथ अंत तक चलती है ।

'हानूश' की कथावस्तु तीन अंकों में संपन्न होती है । नाटक का नायक हानूश नामक सामान्य कुफ़्लसाज़ है और उसकी पत्नी कात्या नायिका है । नाटक के अन्य प्रमुख पात्र हैं –– हानूश का पादरी भाई, बूढ़ा लोहार, ऐमिल, यान्का, जेकब और बादशाह सलामत । इन प्रमुख पात्रों के चरित्र–चित्रण में नाटककार सफल हुआ है । नाटककार ने इसमें मध्ययुगीन विदेशी देश–काल–वातावरण का चित्रण बखूबी से किया है । इस यथार्थवादी ,सामाजिक नाटक में पात्रानुकूल , सहज, बोलचाल की उर्दूमिश्रित भाषा का सफल प्रयोग हुआ है ।

हानूश एक साधारण कुफ़्लसाज़ होकर भी देश की पहली घड़ी बनाने की धून में अपनी जवानी के तेरह साल अभावग्रस्त हालत में खो चुका है । नाटक के प्रारंभ में हानूश की पत्नी कात्या इसी बात को लेकर हानूश के बड़े भाई पादरी से शिकायत करती है । उनका इकलौता बेटा जाड़ों के दिनों में

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY ... KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

ठिठुरकर मर गया है, क्योंकि कमरा गर्म रखने के लिए घर में न इंधन था, न दवा-दारू के लिए पैसे। हानूश कभी ताले बनाता है तो कभी दस-दस दिन निकम्मा ,बेकार रहता है । घर की आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ गयी है कि आज घर में चूल्हा तक नहीं जलाया गया है । पादरी पहले तो कात्या को हानूश का हौसला बढ़ाने की सलाह देता है, लेकिन हानूश के आने के बाद उसे घड़ी न बनाने की नसीहत देकर वह उसे बुरी खबर सुनाता है कि गिरिजेवालों ने हानूश को घड़ी बनाने के लिए आर्थिक सहायता देने से इन्कार किया है ।

पारिवारिक जिम्मेदारी से परेशान, निर्धन हानूश घड़ी बनाने का काम छोड़ देने का फैसला करता है । परन्तु बूढ़ा लोहार, ऐमिल और कात्या उसकी हिम्मत बढ़ाते हैं । उसी समय सुअर की चोरी के जुर्म में तीन साल की सजा काटा हुआ जेकब ,पुलिस तथा सरकारी अधिकारी के डर से भागता हुआ वहाँ आ पहुँचता है । कात्या उसे अपने घर में पनाह इसीलिए देती है कि हानूश उसे ताले बनाने का काम सीखाएगा , जेकब के बनाये ताले बेचकर वह गृहस्थी सँभालेगी और पारिवारिक जिम्मेदारी से मुक्त हानूश जेकब की सहायता से घड़ी बना पायेगा ।

नगरपालिका के सदस्य पाँच सालों तक हानूश को वज़ीफा देते हैं । बूढ़ा लोहार कमानियाँ छड़ ,लीवर, चक्कर आदि चीजें हानूश की सूचनानुसार बनवा देता है और हानूश के सब कामों में जेकब हाथ बँटाता है । फलस्वरूप देश की पहली घड़ी बनाने में हानूश कामयाब होता है । नगरपालिका के सदस्य आपस में सोच-विचार कर, हानूश को अपनी ओर मिला लेने में, उसकी घड़ी पर अपना अधिकार जमाने में और बादशाह की इज़ाजत के बगैर,घड़ी को नगरपालिका के मीनार पर लगाने में सफ़ल होते हैं । नगरपालिका की ओर से आयोजित स्वागत-समारोह में महाराज हानूश की घड़ी देखकर प्रसन्न होते हैं । योजना के मुताबिक उनके सामने नगरपालिका का एक सदस्य ,टाबर ,नया महसूल लगाने की तजबीज पेश करता है । नगरपालिका का अन्य सदस्य,शेवचेक,दरबार में सौदागरों - दस्तकारों के आठ नुमाइन्दों की माँग करता है । बादशाह इन दोनों माँगों पर गौर करने का आश्वासन देते हैं लेकिन नगरपालिका पर बिना उनकी इजाज़त के घड़ी लगाने की बात को लेकर अचानक गुस्से से लाल हो जाते हैं । हानूश ने चोरी-छिपे घड़ी बनायी और नगरपालिका से सहायता ली, इन बातों से नाराज होकर वे आग-बबूले हो जाते हैं । हानूश उनकी चापलुसी करता हुआ कहता है-".... हुजुर ,यह घड़ी मैंने बनाई है, महाराज के क़दमों पर अपनी नाचीज़ ईजाद भेंट करने के लिए, महाराज की इस राजधानी की रौनक बढ़ाने के लिए ..."[1] महाराज हानूश की प्रशंसा से पुलकित होकर उसे दरबारी-पद, एक हजार सोने की मोहरें तथा महीना बाँध देने की घोषणा करते हैं । तभी नगरपालिका का एक

1 भीष्म साहनी - हानूश, पृष्ठ - 95 ।

सदस्य , हुसाक, महाराज के सामने हानूश की सहायता से कुफ़्लसाज़ों की जमात तैयार करवाकर, घड़ियाँ बनवाकर दिसावर में बेचने की योजना पेश करता है । महाराज योजना सुनकर गुस्से से पागल होकर हानूश की दोनों आँखें फोड़ डालने का हुक्म देते हैं ताकि वह कोई दूसरी घड़ी न बनवा सके । महाराज को डर है कि यदि उसने फिर घड़ी बनायी तो इस घड़ी को यहाँ लगाने से क्या फायदा ?

बादशाह के हुक्म की तामीली के बाद दो साल गुजर जाते हैं । अंधे और दरबारी बनाये गये हानूश के घर में अब संपन्नता है । लेकिन वह अंदर–ही–अंदर घुटकर जी रहा है । तीन बार घड़ी तोड़ने की नाकामयाब कोशिश के बाद भी वह घड़ी की आवाज सुनकर जी भी रहा है ।उसकी मनोदशा विक्षिप्त–सी हुई है । उसका दोस्त ,ऐमिल इसलिए कात्या को तुला राज्य में चोरी–छिपे जाकर बस जाने की सलाह देता है । कात्या उसके विचारों से सहमत नहीं होती । लेकिन उसी समय हानूश बादशाह की सवारी से टकराकर घायल हो जाता है । उसकी जान–बुझकर, अपनी जान गँवाने की करतूत देख, कात्या ऐमिल की बातें मानने के लिए मजबूर हो जाती है । ऐमिल जेकब को तुला के सौदागर जोर्जी से मिलने भेज देता है ।

घड़ी की आवाज ठीक समय पर सुनाई न पड़ने पर हानूश बैचेन हो जाता है । गली में लोग बातें करने लगते हैं कि हानूश की घड़ी बंद हो गई है । बड़े वजीर की आज्ञा के अनुसार दो अधिकारी हानूश को घड़ी की मरम्मत के लिए, लिये जाते है, वह लीवर को छूते ही रोमांचित हो जाता है । लोहारी का काम जाननेवाले सहायक आदमी से अपनी प्रशंसा सुन तथा ' यह मेरी घड़ी है ' इस सोच से वह घड़ी की मरम्मत करने में जुट जाता है । हानूश को चाहनेवाला बूढ़ा लोहार नया लीवर बना देता है । घड़ी ठीक होकर चलने लगती है । उसी समय सरकारी अधिकारी उसे यह कहकर पकड़ लेते हैं कि महाराज के मना करने के बावजूद वह दूसरे देश में भाग जाने की और नयी घड़ी बनाने की साजिश कर रहा था । उसकी साजिश पकड़ी गयी है और जेकब कही भाग गया है । अधिकारी की बातें सुनकर हानूश ठिठक जाता है लेकिन जेकब के पलायन के कारण घड़ी का भेद जिंदा रहा है ,यह सोचकर आश्वस्त भाव से महाराज के पास चले जाने के लिए वह तैयार हो जाता है ।

'हानूश ' नाटक की उपर्युक्त कथावस्तु के बारे में डॉ. सत्यवती त्रिपाठी का मत है–" प्रयोग की दृष्टि से इस नाटक की पूरी सप्राणता उसकी विषयवस्तु में चित्रित हानूश के संघर्ष यातना तथा सफलता और असफलता की कथा में हैं ।"[1] डॉ. चन्द्रशेखर ' हानूश ' की कथावस्तु को यथार्थवादी

---

1 डॉ. सत्यवती त्रिपाठी – आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता , पृष्ठ – 153 ।

मानते हुए कहते हैं-" भीष्म साहनी के ' हानूश ' में निरकांक्ष सृजनधर्मिता और उसके पुरस्कार का एक भयंकर यथार्थ प्रस्तुत किया है । एक ओर सिसृच्छा के भीतरी तनाव और युद्ध है । परिवार की विपन्नता में अवमानना, तिरस्कार और उपेक्षा का दंश है, दूसरी ओर सृजन की संकल्पित मुद्रा है।"[1]

निष्कर्ष

' हानूश ' नाटक की कथावस्तु तीन अंकों में संपन्न होती है । इसका नायक हानूश नामक सामान्य कुफ़्लसाज़ है और नायिका हानूश की पत्नी कात्या है । नाटक में अन्य प्रमुख पात्र हैं - पादरी, बूढ़ा लोहार, जेकब , ऐमिल ,यान्का और बादशाह । इनके चरित्र-चित्रण में नाटककार सफल हुआ है । नाटक में मध्ययुगीन विदेशी देश-काल-वातावरण का चित्रण प्राप्त है । नाटक में वर्णित घटनाएँ उस मध्ययुगीन विदेशी कालखण्ड की हैं,जब राजा को सर्वोपरि माना जाता था और राजसत्ता तथा धर्मसत्ता के आगे सब को झुकना पड़ता था । राजसत्ता,धर्मसत्ता और व्यापारी वर्ग की नीति में सामान्य लोग कुचल दिये जाते थे । प्रस्तुत नाटक यथार्थवादी,सामाजिक नाटकों की श्रृंखला में आता है । इस नाटक को लिखने के पीछे नाटककार का उद्देश्य है -' सामान्य कलाकार की विजय दिखलाना'। 'जेकब के पलायन के कारण घड़ी का भेद जिंदा रहता है', यह बात सामान्य कलाकार की विजय-घोषणा करती है । ' हानूश ' नाटक रंगमंचीय दृष्टि से भी सफल हुआ है और उसकी मंचीयता पर पंचम अध्याय में विस्तार से विचार-विवेचन प्रस्तुत है ।

2.2 **कबिरा खड़ा बजार में--**

प्रयोगधर्मी नाटककार भीष्म साहनी की ' कबिरा खड़ा बज़ार में ' द्वितीय नाट्यकृति है, जिसमें इतिहास और कल्पना का सम्मिश्रण है । प्रस्तुत नाट्यकृति हिन्दुस्तान के मध्ययुगीन संत कबीर के जीवन को आधार बनाकर लिखी गयी है । नाटककार ने पहले इसका नाम ' कबीरदास ' रखा था, परन्तु बाद में श्री. एम. के. रैना के सुझाव पर इसका नाम बदल दिया । इस नाट्यकृति में तीन अंक है । यह नाट्यकृति हिन्दुस्तान के मध्ययुगीन वातावरण की विसंगतियों से जूझते कबीर के युवाकाल से प्रारंभ होती है और दिल्ली के तत्कालीन बादशाह सिकंदर लोदी से कबीर की भेंट के साथ खत्म होती है । इस बीच की कथावस्तु कबीर के उन समस्त चारित्रिक तत्वों को उजागर करती है, जिससे उनका व्यक्तित्व आज भी सराहनीय बना हुआ है । इसके नायक कबीर है और नायिका का स्थान कबीर की

---

1 डॉ. चन्द्रशेखर - समकालीन हिंदी नाटक : कथ्य चेतना, पृष्ठ - 470 ।

धर्मपत्नी लोई को प्राप्त है । इसमें कुल मिलाकर सोलह प्रमुख पात्र हैं –कबीर, नूरा, नीमा, लोई, कोतवाल, महन्त, मौलवी, कायस्थ, नन्दू भिखारी और उसकी अंधी माँ, बशीर, रैदास , सेना, पीपा और सिकंदर लोदी । नाटककार पात्रों के चरित्र–चित्रण में सफल हुआ है । इस नाट्यकृति के चरित्र–चित्रण के संबंध में डॉ. धर्मदेव तिवारी का मत है-" चरित्र–विकास की दृष्टि से (कबीर, नीमा, रैदास के चरित्र बहुत कुछ पारम्पारीण हैं किन्तु महन्त रूढ़िवादी धर्मस्थ है, जो धर्म की आड़ में अत्याचार करनेवालों का प्रतीक है, कोतवाल – आज के क्रूर शासक का और कायस्थ चापलूस , जीहजूरियों का प्रतीक है । लोई भोली–भाली सरल नारी है ।"[1] इस नाट्यकृति के उद्देश्य के संबंध में नाटककारने स्वयं लिखा है-"नाटक में उनके काल की धर्मान्धता , अनाचार, तानाशाही आदि के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उनके निर्भीक, सत्यान्वेषी, प्रखर व्यक्तित्व को दिखाने की कोशिश की है । उनके अध्यात्म–पक्ष को नकारना अथवा उसकी उपेक्षा करना अपेक्षित नहीं था, उस आधार – भूमि को स्थिर कर पाना ही अपेक्षित था, जिसमें उनके विराट व्यक्तित्व का विकास हुआ ।"[2] प्रस्तुत नाट्यकृति का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है ––

काशी नगर के जुलाहों की बस्ती में एक झोंपड़े के सामने नूरा सूत पका रहा था । नूरा कबीर के पिता का नाम है तथा नीमा उसकी माँ का नाम है । नाट्यकृति के प्रारंभ में, कबीर के माता–पिता और करमदीन नामक जुलाहे की बातचित से पता चलता है कि कबीर किस तरह बैठकबाजी करता फिरता है, लोगों से उलझता है और मार खता है । वास्तव में कबीर बाज़ार में थान बेचने गया था पर वह थान करमदीन के हाथों पर भिजवाकर लोगों से उलझता फिर रहा है । जुलाहा बताता है कि बड़े महन्त की सवारी निकलते समय महन्त के लोगों ने किसी लौंड़े को बेंत मारे । कबीर बीच में कूदते ही उन्होंने लौंड़े को तो छोड़ा पर वे सब कबीर पर टूट पड़े । जुलाहा नूरा–नीमा को सलाह देता है कि वे कबीर की शादी कर दे ताकि उसके पैरों में बेड़ियाँ पड़ जाने से वह सुधर जायेगा । नूरा बताता है कि कबीर किसी की नहीं सुनता । वह दो बार घर से भाग चुका है । नीमा नूरा को समझाती है कि वह कबीर से कुछ उल्टी–सीधी बात न करें, कबीर कहीं भाग खड़ा हो जाएगा । कबीर के आने से पहले वे दोनों कबीर के पराये होने के बारे में बातें करते रहते हैं । कबीर उनकी बातों से आभास पाकर अपनी माई नीमा से सच उगलवा लेता है कि वह किसी विधवा बामनी का बेटा है, जो लोक–लाज के डर से उसे छोड़ गयी थी । कबीर की लहुलुहान पीठ पर हल्दी–तेल लगाकर नीमा कबीर को सलाह देती है कि वह काशी छोड़कर कहीं अन्यत्र जाकर गृहस्थी बसाये, जुलाहा बनकर जीये, लोगों

---

1 संपा. वि.सा. विद्यालंकार –' प्रकर 'अगस्त, 1982, पृष्ठ–33 ।

2 भीष्म साहनी –कबिरा खड़ा बजार में, पृष्ठ– 9 ।

से उलझता न फिरे और मार न खाये । अपनी माँ की बातें सुनकर कबीर अपने हृदय की पीड़ा व्यक्त करते हुए स्वयं से ही कह उठते हैं --" माँ को मेरी पीठ पर पड़े घाव तो नजर आते हैं, लेकिन मेरा दिल कैसा छलनी हो रहा है यह कोई नहीं देख पाता ।.... मेरी यह भटकन कब खत्म होगी, मेरे मालिक ?.... मैं भी तेरा बन्दा हूँ ,मालिक ,फिर मेरी ठौर कहाँ पर है ?

परबति परबति मैं फिरिया
नैन गँवाये रोये
सो बूटी पाऊं नहीं
जाते जीवन होये
सुखिया सब संसार है,खावै अरू सोवै
दुखिया दास कबीर है,जागै अरू रोवे ।"[1]

काशी नगर में आए हुए, कुरूक्षेत्र अखाड़े के महन्त कोतवाल से चाहते हैं कि कोतवाल उनका मठ बनवाने के लिए डोम-चमारों की बस्ती को हटाये लेकिन मौलवी धीरे से कोतवाल को आगाह करते हैं कि इन डोम-चमारों की बस्ती में कुछ मुसलमान भी हैं, उनका खयाल करना चाहिए । वह कोतवाल से शिकायत करता हुआ,कबीर की बातें बताता है-" कहता है, मन्दिर में मत जाओ , मस्जिद में मत जाओ । पण्डित - पुजारियों को भी गालियाँ देता है,मौलवी - मुल्लाओं को भी ।"[2] मौलवी और कोतवाल जब कबीर के बारे में बातें कर रहे थे , तब बाहर गली में कबीर का पद गाता हुआ नन्दू भिखारी जा रहा था । कोतवाल ने चोबदार द्वारा उस भिखारी को अंदर बुलाया । उसके मुँह से कबीर का पद सुनकर उसकी प्रशंसा की और उसे एक अशर्फी इनाम दी । भिखारी खुश होकर, बाहर जाकर, फिर से कबीर का पद गाने लगा तो कोतवाल ने उसे चोबदार द्वारा कोड़े लगवाये । बेचारा भिखारी चार कोड़े लगते ही दम तोड़ गया । फिर कोतवाल ने हुक्म दिया कि भिखारी की लाश गली-गली ले जायेगी और साथ में सरकारी आदमी भी होगा तब अपने-आप आतंक फैलेगा ।

कबीर अपने मित्र रैदास को बताते हैं कि वह दक्षिण से आए हुए महात्मा के प्रवचन लुक-छिपकर सुनते रहे । उनकी बातें सुनकर कबीर के मन के सारे संशय दूर हो गये हैं । अब उन्होंने जाना है कि मनुष्य से प्रेम करना ही भगवान की सच्ची आराधना है । उनसे उन्होंने गुरूदीक्षा भी ली है । उसी समय कबीर के दूसरे दोस्त सेना ने आकर भिखारी की मृत्यु की खबर सुनायी ।

1 भीष्म साहनी - कबिरा खड़ा बजार में , पृष्ठ - 27-28 ।

2 वही, पृष्ठ 41 ।

अंमलदारी मुसलमान लोदी बादशाह की है । यहाँ का कोतवाल तुर्क है और कबीर साधारण जुलाहा है । कायस्थ उन्हें बताता है कि वह वक्त रहते उन्हें आगाह करने आया है । लोदी बादशाह बिहार की फतह के बाद दिल्ली लौटते समय, काशी होकर जायेंगे । कबीर उस समय सत्संग, कवित्त और बहस न करें । कबीर अपनी बात पर अड़े रहते हैं कि वे सत्संग करेंगे/और गलियों में घूमकर कवित्त करेंगे । कायस्थ के जाने के बाद रैदास और पीपा वहाँ आ जाते हैं । कबीर उनको कायस्थ की बातें बताते हैं, तभी कोतवाल आकर उनको पकड़कर हवालात में बंद करता है । लेकिन कोतवाली का एक अधिकारी आकर खबर देता है कि बादशाह सिकंदर लोदी कबीर से मिलना चाहते हैं । कोतवाल घबराकर अधिकारियों को आगाह करता है कि बादशाह को खबर न होने पाये कि कबीर का झोंपड़ा जलाया गया था और उसके साथ कोई ज्यादती की गयी थी । अब कोतवाल, कायस्थ और अधिकारी मान जाते हैं कि कबीर जरूर कोई पहुँचा हुआ फकीर है, इसलिए उसे कितनी बार गंगा में डूबोया, चमेड़ी उधेड़ी गयी, मस्त हाथी के आगे फेंका गया, पर उस पर कोई आँच नहीं आयी ।

सड़क के किनारे कबीर भण्डारे का आयोजन करते हैं । जब सब लोग–चमार–नाई–मोची–हिन्दू–तुर्क मिलकर भोजन करते हैं ,तब उसे भण्ड़ारा कहा जाता हे । भण्ड़ारे के कारण धर्म की मर्यादाएँ टूटती हैं और जात–पाँत के नियम भी टूटते हैं । कबीर और उनके साथी दोस्तों द्वारा जब सत्संग चलने लगता है, तब सिकंदर लोदी बादशाह आते हैं। वे कबीर से पूछते हैं कि वे फकीर है या दुनियावी आदमी ? वे उन्हें दिल्ली में आने का निमंत्रण देते हैं । वहाँ वे उनकी मुलाकात शेख तकी से करवाना चाहते हैं । वे जानना चाहते हैं कि हर काम इबादत कैसे बन जाती है ? वे पूछते हैं कि जंग इबादत है क्या ? कबीर निर्भयता से जवाब देते हैं कि जंग इबादत नहीं है । इन्सान की खिदमत करना, उसे सुखी बनाना इबादत है । जंग करना तो दीन की तौहीन है । कबीर के जवाब से सिकंदर चौंकते हैं । पर वे उससे नरमी से इसलिए पेश आते हैं कि कबीर फकीर है और वे फकीर पर अपना हाथ नहीं उठाते । वे जानना चाहते हैं कि कबीर का मजहब क्या है ? कबीर उन्हें बताते हैं कि वह तो एक खुदा का बंदा है । वे उस खुदा की बंदगी करते हैं जो हर एक इन्सान के दिल में बसता है । कबीर की बातों से वे जान जाते हैं कि वह मुसलमान या हिन्दू नहीं है । यह कोई खब्ती –जनूनी आदमी है जो उल्टी-सीधी बातें करके बदअमनी फैला रहा है । वे कोतवाल को कबीर पर कड़ी निगरानी रखने का हुक्म देते हैं । फिर वे आगबबूला होकर कबीर से कहते हैं कि आज के बाद कभी उन्हें शिकायत मिली कि कबीर ने दीन की तौहीन की है तो वे उसकी टाँगे चीर देंगे। वे कोतवाल को कबीर को शहर से बाहर निकालने का और जमा हुए लोगों को हटाने का हुक्म देते हैं । सिपाही

सेना अपना सुझाव देता है कि लौगों को मना कर दे कि उनके कवित्त गली–बाजार में न गाये ताकि उन पर कोई मुसीबत न आये । लेकिन कबीर निड़रता से तय करते हैं कि अब वे सब मिलकर अपने कवित्त गली–बाजार में गायेंगे, समागम करेंगे , सत्संग लगायेंगे । उसी समय भिखारी की अंधी माँ रोती हुई आती है । वह भी कबीर के पद गाकर अपने बेटे के पास जाना चाहती है । सेना और बशीर अंधी भिखारिन के साथ चले जाते हैं ।

कबीर अपने मित्र सेना और रैदास के साथ सत्संग करते हैं । उस वक्त एक लड़का आकर कबीर को बताता है कि कबीर का झोंपडा जल गया है । आग बस्ती में भी फैल रही है । कबीर उस लड़के के साथ चले जाते हैं । कबीर के जाने के बाद रैदास कुछ देर और सत्संग करते हैं । वे धैर्यपूर्वक लोगों से कहते हैं-"... भाइयों ,कुछ देर के लिए सत्संग बनाए रखे । सत्संग हम नहीं तोड़ेंगे ।कल यहीं पर मिल बैठेगे । सत्संग बनाये रखो ।"[1]

पीपा, सेना और बशीर सड़क के किनारे एक चबुतरे पर बैठकर आपस में बातें कर रहे थे। पीपा ने बताया कि एक ही रात में महन्त के आदमियों ने गोरखनाथियों के पाँच आदमी मरवा डाले । बशीर के मतानुसार कबीर को ऐसे लोगों के मुँह नहीं लगना चाहिए । पीपा जानकारी देता है कि कुरूक्षेत्र के महन्त का झगड़ा गोरखपंथियों के अलावा डोमों से भी है । वे डोमों की बस्ती हटाने के लिए कोतवाल से मिलने गये थे । सेना खबर देता है कि उसी बस्ती में कल कबीर और रैदास ने गीत गाये । उसे कबीर की बड़ी चिन्ता हो रही है । पीपा उसे फटकारते हुए पूछता है-" तुम्हें कबीर की बड़ी चिन्ता है, पर कल तू अस्सी घाट पर उस साधु से क्या कर रहा था ?" [2] जवाब में सेना कहता है कि वह शास्त्रार्थ कर रहा था जिसके फलस्वरूप साधु ने लट्ठ उठा लिया और बहुत – से पण्ड़े इकट्ठे कर लिये । उसी समय गीत गाते हुए कबीर वहाँ आ जाते हैं । कबीर अपनी माँ के प्रेम से अभिभूत होकर कहते हैं-" सोच रहा हूँ, जिसके दिल में प्रेम है,उसके दिल में भगवान वास करते हैं ।"[3] उसी समय रैदास आते हैं । डोमों की बस्ती में कबीर के साथ गीत गाने की वजह से रैदास को उनके बापू ने घर से निकाला है । तभी एक साधु वहाँ आ जाता है । साधु को गर्व है कि वह ब्राह्मणों की 108 जातियों में से ऊँचा गौंड़ ब्राह्मण है । कबीर उसकी जाति–पाँति को लेकर, उच्च–नीचता की भावना को ललकारते हुए कहते हैं-" तब तो आपकी धमनियों में अमृत बहता होगा । बहता है ना ? माँ के पेट

---

1 भीष्म साहनी – कबिरा खड़ा बजार में , पृष्ठ – 62 ।

2 2 वही, पृष्ठ – 66 ।

3 3 वही, पृष्ठ – 68 ।

से निकले होंगे तो माथे पर तिलक लगाकर निकले होंगे ?" [1] साधु के चले जाने पर पीपा कबीर से पूछता हे कि कल वे अस्सी घाट के पास ज्ञानी महाराज से क्या कर रहे थे ? कबीर बताते हैं कि वे ज्ञानी महाराज से गृहस्थ ,साधु, हिन्दू और तुर्क आदि सब के लिए सुलभ भक्ति मार्ग के बारे में बहस कर रहे थे । उसी समय मस्जिद में अजान होने लगती है। कबीर हँसकर कहते हैं कि मुल्ला साहब,जरा ऊँची आवाज में अजान दें,आवाज सातवें आसमान तक तो पहुँचे । मौलवी उनकी बकबक सुनकर, बौखलाकर उन्हें धमकाते हैं कि तुम्हारे बापू नूरे की वजह से हम चुप हैं, नहीं तो तुम्हें जिन्दा गाड़ देते । कबीर की उलझनों से परेशान सेना कह उठता है-" हम लोग क्या कर सकते हैं, कबीर ? मुट्ठी-भर ही तो है ? " [2] फिर सब मिलकर गीत गाते हैं-"मोको कहाँ ढूँढे बन्दे ,मैं तो तेरे पास में।" [3]

कबीर के जलाये हुए झोंपड़े की थोड़ी-बहुत मरम्मत की जा चुकी है । उसमें कबीर अपनी नई-ब्याही पत्नी, लोई को लाये हैं । लोई की बातों से कबीर जान जाते हैं कि लोई को किसी साहुकार के छैल - छबीले बेटे से प्यार था । वह उसके साथ शादी करना चाहती थी । वह उसके साथ भागकर भी जा सकती थी । ' यह तो बड़े अनर्थ की बात हुई ' कहते हुए कबीर लोई को साहुकार पुत्र के घर स्वयं छोड़ आने को तैयार हो जाते हैं । पर लोई अकेली चली जाती है । लेकिन कबीर के सहृदय ,सरल और सच्चे व्यक्तित्व से परिचित होकर लोई फिर वापस उनके पास आ जाती है । वे उसे अपने हाथों से बनाई हुई लाल रंग की चुनरी पहनाते हैं ।

कबीर और कायस्थ ,दोनों आपस में बातचित कर रहे थे । कायस्थ कबीर को सलाह देता है कि कबीर के पास प्रतिभा है , इसलिए उसे चाहिए कि छंद और लय के अनुसार कविता लिखे, गली-बाजार में घूमकर,गँवार भाषा में छंद-दोष से युक्त कविता न करें । खंड़न-मंड़न के झमेले में न पड़े । तुर्क-हिन्दू दोनों से झगडा न मोल ले । अच्छे अच्छे लोगों से मेल-मिलाप बढ़ाये ।महाराज की कृपा पाकर वह राजकवि भी बन सकता है । कबीर उससे बहस करते हैं कि जब तक ब्राहमण ,तुर्क और निम्न जाति के लोग अपने को एक-दूसरे से अलग मानते हैं, उनमें प्रेम और भाईचारा नहीं है तब तक भक्तिमार्ग में सब समान रूप से नहीं हो सकते । वे इन्सान को इन्सान के नाते गले लगाने के लिए मन्दिर के सारे पूजा-पाठ और मस्जिद के रोजा-नमाज भी छोड़ना चाहते हैं । उनके तर्क से परेशान कायस्थ उन्हें समझाता है कि ऐसे में कबीर कुचल दिये जायेंगे ,क्योंकि काशी का राजा तो हिन्दू है पर

---

1 भीष्म साहनी - कबिरा खड़ा बजार में ,पृष्ठ -70 ।

2 -वही, पृष्ठ 74 ।

3 -वही, पृष्ठ 74 ।

उनके हुक्म की तामीली करते हैं । कबीर गाते हुए जाते हैं " निर्भय ,निर्गुण गुण गाऊँगा ।" कुछ समय मंच पर खामोशी रहती है । कुछ भक्त एक ओर खड़े रहते हैं । फिर सहसा अनेक दिशाओं से कबीर का पद गाते हुए अनेक लोग आ जाते हैं ।

इस नाट्यकृति का रंगमंच पर सफल प्रयोग भी हुआ है ।

निष्कर्ष

भीष्म साहनी की द्वितीय नाट्यकृति ' कबिरा खड़ा बजार में ' हिन्दुस्तान के मध्ययुगीन संत कबीर के जीवन–चरित्र पर आधृत है । हिन्दू–मुस्लिमों के बाह्याडम्बर का विरोध करनेवाले जाति–पाँति के विरूद्ध आवाज उठानेवाले, इन्सान के रूप में देखनेवाले और खुदा को हर इन्सान के हृदय में देखनेवाले ,उच्चवर्णियों और शासकों के अत्याचार सहकर भी उनके खिलाफ बोलनेवाले और कवित्त गाते हुए ,सत्संग तथा भण्ड़ारा करनेवाले कबीर के जीवन–चरित्र का इसमें सफल चित्रण हुआ है । नाटक की संपूर्ण कथावस्तु तीन अंकों में संपन्न होती है । कबीर इस नाट्यकृति के नायक हैं और उनकी धर्मपत्नी ,लोई इसकी नायिका है । इसमें स्थित करीब सोलह पात्रों का चरित्र–चित्रण नाटककार ने सफलता से किया है । तत्कालीन सामाजिक,धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों से जूझते,कबीर के सत्यान्वेषी और निर्भीक व्यक्तित्व को दर्शाने के उद्देश्य में नाटककार पूर्णतः सफल हुआ है । इसमें तत्कालीन देश–काल–वातावरण का सजीव चित्रण है ।

2·3 **माधवी––**

भीष्म साहनी ने अपनी तीसरी नाट्यकृति ' माधवी ' महाभारत की एक कथा को आधार बनाकर लिखी है । इस नाट्यकृति की पौराणिक कथा में कल्पना तत्व का सुन्दर समन्वय हुआ है । इसकी कथावस्तु मिथकीय है क्योंकि वह महाभारत की कथा पर आधृत है । नायिकाप्रधान इस नाट्कृति की कथावस्तु तीन अंकों में संपन्न होती है । इसमें कुल नौ प्रमुख पात्र हैं –– माधवी, गालव ययाति, विश्वामित्र, हर्यश्च , दिवोदास, मारीच, तपास और कथावाचक । इनके चरित्र–चित्रण में नाट्यकार पर्याप्त सफल हुआ है । पौराणिक कथा के अनुकूल इस नाट्यकृति में देश–काल–वातावरण का चित्रण भी हुआ है । इसकी भाषा पात्रानुकूल ,प्रसंगानुकूल तथा सजीव है । इस नाट्यकृति का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है ––

नाट्यकृति के प्रारंभ में कथावाचक आकर बताता है कि धर्मग्रंथों में मनुष्य के अनेक गुणों में से ' कर्तव्यपालन " को सब से बड़ा गुण कहा है । कर्तव्यपरायण व्यक्ति को सच्चा साधक माना गया है । फिर कथावाचक कर्तव्यपरायणता की कथा सुनाते हैं ।

महाभारत में एक प्रसंग आता है कि देवलोक में विष्णु भगवान का ध्यान उनके एक भक्त द्वारा उनका स्मरण किए जाने के कारण टूट जाता है । वे तुरंत उस भक्त की सहायता के लिए अपने वाहन गरूड़ को भेजते है । गरूड़ उस भक्त की कथा-व्यथा जानकर उसे दानवीर ययाति के पास भेजते हैं । यह भक्त, विश्वामित्र का शिष्य गालव है,जो आठ सौ अश्वमेधी घोड़ों की गुरूदक्षिणा जुटाने में असमर्थ होकर,निराशा से आत्महत्या करने से पूर्व भगवान विष्णु का स्मरण कर रहा था । गालव ययाति के आश्रम मे जाकर उनसे गुरूदक्षिणा देने के लिए आठ सौ अश्वमेधी घोड़ों का माँग करता है । वानप्रस्थाश्रमी राजा ययाति के पास घोड़े नहीं है लेकिन स्वयं को " दानवीर ' कहलाने के लोभ में वे उसे अपनी एकमात्र पुत्री माधवी को दान में देते हैं । माधवी अलौकिक गुणों से युक्त युवती है । भविष्यवाणी के अनुसार उससे चक्रवर्ती पुत्र का जन्म होनेवाला है । एक ब्रह्मचारी द्वारा उसे चिरकौमार्य का वरदान भी मिला है । इसलिए कोई भी राजा माधवी के बदले में गालव को सहर्ष आठ सौ अश्वमधी घोड़े देगा ।

गालव के साथ माधवी चल पड़ती है । माधवी के अलौकिक गुणों की बातें सुनकर गालव सोचता है कि क्या माधवी के गर्भ से उत्पन्न होनेवाला गालव का पुत्र भी चक्रवर्ती राजा बनेगा ? माधवी को आठ सौ अश्वमेधी घोड़ों के बदले में राजा को सौंपने का अर्थ हुआ माधवी को खो देना । वह महारानी बनेगी, गुरूदक्षिणा भी जुट जायेगी, पर उसे क्या मिलेगा ? उसे माधवी को सदा के लिए खोना होगा । तभी आकाशवाणी उसे सावधान करती है कि मुनिकुमार , ऐसा सोचने से तुम अपने गुरू और महाराज ययाति के साथ विश्वासघात करोगे ? सभी देवता तुम्हारे कर्तृत्व कर अपनी नजर लगाये बैठे हैं ।

गालव और माधवी अश्वमेधी घोड़ों की खोज में उत्तराखण्ड की ओर निकल पड़ते हैं । यात्रा के दौरान, वे दोनों एक-दूसरे के प्रति आकर्षण और प्यार की भावना को महसूस करते हैं । घोड़ों की तलाश में वे दोनों सर्वप्रथम अयोध्या नरेश हर्यश्च के दरबार में पहुँचते हैं । राजा हर्यश्च राज-ज्योतिषी द्वारा माधवी के लक्षणों की जाँच करवाकर, उससे पुत्रलाभ होने तक अपने रनिवास में रखते हैं और गालव को दो सौ अश्वमेधी घोड़े देते हैं ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

ययाति के आश्रम में उत्तराखण्ड़ की यात्रा से लौटे हुए ययाति के मित्र मारीच आकर उन्हें समाचार सुनाते हैं कि राजा हर्यश्च ने माधवी को महारानी बनाकर गालव को दो सौ अश्वमेधी घोड़े देना स्वीकार किया है । मारीच ययाति का समझाते हैं कि वे विश्वाचित्र के पास जाकर अभ्यर्थना करें कि वे दो सौ घोड़ों से सन्तुष्ट हो जाएँ । इससे माधवी का कल्याण होगा । वह राजा हर्यश्च की महारानी बनकर रहेगी । उसे शेष घोड़ों के लिए किसी अन्य राजा के रनिवास में रहना न पड़ेगा । लेकिन ययाति संतान–स्नेह के लोभ में पड़कर अपनी दुष्कीर्ति नहीं चाहते । उनके लिए माधवी दान में दी गयी वस्तु है । वे अपने मित्र को समझाते हैं कि विश्वामित्र ने जान–बूझकर गालव का दंभ तोड़ने के लिए ऐसी असंभव गुरूदक्षिणा माँगी है । वे चाहते थे कि गालव हाथ बाँधे, क्षमा–याचना करे । लेकिन उन्होंने अपनी पुत्री माधवी को दान में देकर असंभव को संभव बना दिया है । विश्वामित्र उन पर बिगड़ सकते हैं । तब वे दोनों आपस में वार्तालाप कर रहे थे तब एक आश्रमवासी आकर समाचार देता है कि अश्वमेधी घोड़े विश्वामित्र के पास भेजे जा रहे हैं । ययाति समझ जाते हैं कि माधवी से राजा हर्यश्च को चक्रवर्ती पुत्र की प्राप्ति हुई है और गालव को दो सौ अश्वमेधी घोड़े दिये गये हैं ।

गालव शेष घोड़ों की खोज में, माधवी के साथ काशी नरेश दिवोदास के पास पहुँचता है । दिवोदास माधवी के बदले में दो सौ अश्वमेधी घोड़े देने को तैयार होता है । विलासी और कामी दिवोदास के पास आया हुआ एक साधु बताता है कि मुनिराज भृगु ने उनके लिए एक यज्ञ संपन्न किया है । देवतागण उनसे प्रसन्न हैं और शीघ्र ही उन्हें पुत्र–लाभ होगा । साधुवचन सुन, दिवोदास माधवी को अपने पास रखने को मान जाता है परन्तु वह उन्हें धमकाता है कि यदि माधवी से चक्रवर्ती पुत्र :का लाभ न हुआ तो उन दोनों को काल–कोठरी में बंद किया जायेगा ।

राजा गाधि ने अपना यज्ञ संपन्न होने के बाद ब्राह्मणों को एक हजार अश्वमेधी घोड़े दान में दिए । ब्राह्मणों ने उन घोड़ों को उत्तराखण्ड़ के अनेक राजाओं को बेच डाले । शेष घोड़ों को लेकर, जब वे वितस्ता नदी पार कर रहे थे तो नदी में जोरों की बाढ़ आयी और बहुत–से घोड़े डूब गये । शेष बचे घोड़ों को खरीदना विश्वामित्र ने स्वीकार किया । अब उत्तराखण्ड़ में आठ सौ अश्वमेधी घोड़े नहीं हैं, गालव अपनी गुरूदक्षिणा कैसे जुटा पाएगा, इस विचार से चिन्तित एक तापस विश्वामित्र से बिनती करता है कि वे गालव को ऋण–मुक्त कर दे । लेकिन विश्वामित्र अपने शिष्य के स्वाभिमानी स्वभाव को जानकर ऐसा नहीं करते । वे तापस को बताते हैं कि महत्त्वाकांक्षी गालव का दंभ तोड़ने के लिए उन्होंने इतनी कठिन परीक्षा ली है । महत्त्वाकांक्षी लोगों में यदि दंभ हो तो वह उनके विनाश का कारण

बन जाता है ।

गालव ने माधवी के द्वारा भोजनगर के वृद्ध राजा उशीनर से दो सौ अश्वमेधी घोड़े प्राप्त किये हैं । राजा उशीनर को भी चक्रवर्ती युवराज का लाभ हुआ । गालव और माधवी, दोनों शेष दो सौ घोड़ों की खोज में भटकने लगे । खोज – यात्रा के दौरान, एक दिन गालव पाता है कि माधवी उसे बताए बगैर उसे छोड़कर कहीं चली गयी है । गालव माधवी के जाने पर बड़ा चिन्तित हो जाता है कि वह उसे मँझधार में छोड़ गयी है । लेकिन माधवी सीधे विश्वामित्र को पास जाकर उनसे नम्र निवेदन करती है कि अब कहीं अश्वमेधी घोड़े नहीं हैं । शेष दो सौ अश्वमेधी घोड़ों के लिए वे उसे रख ले ताकि गालव मुक्त हो सके । वह उन्हें बताती है कि गालव उसका यहाँ आना नहीं जानता ।
गुरू–दक्षिणा जुटा न पाने की वजह से वह अपनी या गालव की ओर से उनके सामने क्षमा–याचना करने नहीं आयी है । वह उनसे कहती है " गालव ने गुरू–दक्षिणा देने की प्रतिज्ञा की है उसकी प्रतिज्ञा मेरी प्रतिज्ञा है महाराज ।

विश्वामित्र : तुम गालव से प्रेम करती हो ?

माधवी : हाँ, महाराज ।

विश्वामित्र : गालव से प्रेम करते हुए तुम मेरे साथ रहना चाहती हो ?

माधवी : हाँ, महाराज । गालव से प्रेम करते हुए ही मैं तीन राजाओं के पास रह चुकी हूँ।" [1]

विश्वामित्र जानना चाहते हैं कि वह ऐसा प्रस्ताव लेकर क्यों आयी है ? वह बताती है कि गालव बहुत दुःखी है। गुरू–दक्षिणा जुटा न पाने पर वह आत्महत्या कर लेगा । माधवी के : विचार–आचार से अभिभूत हुए विश्वामित्र कह उठते हैं – " मैने गुरू–दक्षिणा पा ली, माधवी ।मैं गालव का दम्भ तोड़ना चाहता था, तुमने मेरा दम्भ तोड़ दिया ।.... आश्रम में प्रवेश करो, माधवी ।"[2]

विश्वामित्र के आश्रम में माधवी के जाकर रहने के कारण गालव अपनी गुरू–दक्षिणा जुटाने में यशस्वी हुआ । वह कठिण परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ । चारों ओर उसका नाम फैल गया । आकाश से पुष्प–वृष्टि हुई । ऋषि विश्वामित्र को अपने शिष्य पर गर्व होने लगा । ययाति भी आनंदित हुए । उनके आश्रम में एक दिनमें समारोहों का आयोजन रखा गया । पहले गालव की दीक्षा, बाद में माधवी का स्वयंवर । स्वयंवर में अन्य राजाओं के अलावा, वे तीनों राजा, जिनके रनिवास में माधवी रह चुकी

---

1 भीष्म साहनी – माधवी, पृष्ठ – 81 ।

2 वही, पृष्ठ – 81 ।

थी ,अपने बेटों को लेकर आये थे । इसकी कारणमीमांसा आश्रमवासी इस प्रकार करते हैं "– दूसरा आश्रमवासी : वह किसलिए ? इसमें क्या प्रयोजन है । स्वयंवर में बच्चों का क्या काम ?

पहला आश्रमवासी : माधवी को प्रलोभन देने के लिए । प्रार्थियों की पाँत में बैठा राजा अपने सामने माधवी के पुत्र को खड़ा कर देगा, यह सोचकर कि अपने पुत्र को देखकर माधवी उसकी ओर खिंची चली आयेगी ।

दूसरा आश्रमवासी : माधवी किस–किसकी ओर खिंची जायेगी ? तीनों नरेश अपना–अपना युवराज ले आये हैं क्या कोई भी माँ निर्णय कर सकती है कि वह किस बच्चे के पास जाये ? इससे तो माधवी बड़ी व्याकुल होगी ।"[1]

माधवी के स्वयंवर से पूर्व गालव माधवी से मिलना चाहता है । प्रवेश-द्वार में खड़ी माधवी को वह पहचान नहीं पाता क्योंकि अब वह अधेड़ उम्र की, अनाकर्षक स्त्री लगने लगी है । गालव माधवी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हुआ स्वयं को स्वतंत्र समझने को कहता है । माधवी उसका अभिप्राय कुछ–कुछ समझकर उसे पूछती है कि क्या वह उसे छोड़ना चाहता है ? गालव उसके साथ विवाह न करने की अपनी विवशता का कारण बताता है । वह उसके गुरू के आश्रम में रह चुकी है । इसलिए धर्म और नैतिक मर्यादाओं का उल्लंघन कर वह उसे अपनी पत्नी नहीं मान सकता । लेकिन माधवी जान गयी है कि ये सब खोखली बातें हैं। वह उसके रूप–यौवनहीन शरीर को देखकर उसे अपनाने से कतरा रहा है । माधवी गालव को सुखी और स्वंतत्र देखना चाहती है। वह उससे प्रेम करती है, इसलिए प्रेम का कर्तव्य निभाते हुए उसे स्वतंत्र करना चाहती है । वह उसे समझाती है–"तुम निश्चिन्त हो जाओ, गालव, तुम सचमुच स्वतन्त्र हो । मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बन सकती । शरीर की शिथिलता तो दूर हो सकती है गालव, मैं अनुष्ठान करके फिर से युवती बन सकती हूँ, पर अब मैं दिल से तो युवती नहीं हूँ ना । मैं तो वह माँ हूँ जिसकी गोद भरती गयी और खाली होती गयी । अब तो सन्तान धारण करने से ही मुझे डर लगता है ।"[2] वह उसे बताती है कि अब वह यहाँ से भागकर चली जायेगी । गालव उसे अपनाना चाहता है । वह उसे अनुष्ठान कर पुनः नवयौवन पाने को कहता है । युवती माधवी को पाकर वह स्वयं को धन्य समझेगा । लेकिन माधवी उसकी बातों से सहमत नहीं होती । वह समझाती है कि यह गालव की छिछली भावुकता है । यौवन और रूप तो मिल जायेंगे, पर वह अपने छलनी हुए दिल का

---

1 भीष्म साहनी – माधवी, पृष्ठ– 83 ।

2 वही , पृष्ठ 95 ।

क्या करेगी ? 'इतने बड़े संसार में मेरे लिए भी कोई स्थान होगा " ऐसा कहती हुई वह चली जाती है । उसके जाने के बाद आश्रमवासी और ययाति आकर गालव को दीक्षा–समारोह के लिए लेकर जाते हैं ।

प्रस्तुत नाट्यकृति की विषयवस्तु के सन्दर्भ में डॉ. सत्यवती त्रिपाठी का मत है-" वस्तुगत स्तर पर इस नाटक के प्रयोगों की विशेषता स्त्री के प्रति पुरूष के व्यवहार को लेकर शोषण और दमन की परंपरा और सामंतवादी मनोवृत्ति के यथार्थवादी शैली के उद्घाटन में है ।"[1]

निष्कर्ष––

भीष्म साहनी की तीसरी नाट्यकृति ' माधवी ' महाभारत की एक कथा पर आधृत होने के कारण इसकी विषयवस्तु मिथकीय है । उसकी कथावस्तु तीन अंकों में संपन्न होती है । इसके प्रमुख नौ पात्रों के चरित्र–चित्रण में नाट्यकार को पर्याप्त सफलता मिली है । पौराणिक कथा के अनुकूल इसमें देश–काल–वातावरण और भाषा का व्यवहार हुआ है । इसकी नायिका माधवी की जीवन–कथा के माध्यम से सदियों से चली आई, कर्तव्य, निष्ठा, त्याग, आदर्श और प्रेम के दमन–चक्र में पीसती हुई नारी की दयनीय और कठपुतली के समान स्थिति पर प्रकाश डालने के उद्देश्य में नाट्यकार सफल हुआ है । पौराणिक कथा के माध्यम से आज के समाज की आलोचना करने के उद्देश्य को व्यंजित करने में भी नाट्यकार सफल हुआ है । नाट्यकृति के अंत में माधवी स्वयं निर्णय कर, अपने प्रेमी गालव का भी त्याग कर, अपने अस्तित्व की खोज में अकेली चली जाती है । माधवी का यह रूप आज भी आधुनिक नारी का रूप है ।इसके जरिए नाट्यकार ने आज के नारी की स्थिति दर्शायी है । मंचीयता की दृष्टि से यह नाट्यकृति सफल सिद्ध हुई है ।

2.4 **'मुआवज़े –**

"मुआवज़े 'भीष्म साहनी का चौथा नाटक है ।इस नाटक में अंकयोजना नहीं है । इसमें बारह दृश्यों की मालिका है । नाटककार ने इसे "प्रहसन "कहते हुए अपने "दो शब्द "में इसकी विषयवस्तु के सम्बन्ध में लिखा है-"यह प्रहसन हमारी आज की विडम्बनापूर्ण सामाजिक स्थिति पर किया गया व्यंग्य है । नगर में साम्प्रदायिक दंगे के भड़क उठने का डर है । इक्का –दुक्का छोटी–मोटी घटनाएँ भी घट चुकी है । इस तनावपूर्ण स्थिति का सामना किस प्रकार किया जाता

---

1 डॉ. सत्यवती त्रिपाठी – आधुनिक हिन्दी नाटकों में प्रयोगधर्मिता, पृष्ठ– 85 ।

है, हमारा प्रशासन, हमारे नागरिक, हमारा धनी वर्ग, हमारे सियासतदाँ किस तरह इसका सामना करते हैं, इसी विषय को लेकर नाटक का तानाबाना बुना गया है ।"[1]

वातावरणप्रधान इस नाटक में शहर में दंगे होने के डर से उत्पन्न परिस्थितियों में प्रशासनिक लोग, मंत्री, नेता, नागरिक, धनी लोग, नागरिक सभा के लोग, व्यापारी, झोंपड़ीवाले, गुमास्ता और गुण्ड़े आदि सब खुद को लाभान्वित करके किसी न किसी रूप में दंगे के मुआवज़े हथियाने के फिराक में हैं । इसलिए प्रशासन और नागरिक सभा के लोगों द्वारा सद्भाव और भाईचारे की दुहाई देकर किए गए प्रयास सतही लगते हैं । नाटककार अपने इस उद्देश्य को रेखांकित करने में यशस्वी हुआ है कि दंगे के दौरान खत्म हो जानेवाली जिन्दगियों का मुआवज़ा तो हम दे सकते हैं पर मानवीय संवेदनाओं, कोमलताओं और मूल्यों के खत्म हो जाने का मुआवज़ा हम कैसे चुकायेंगे ?

इस नाटक में नाटककार ने गंभीर समस्या को सरल और सहज भाषा में अभिव्यक्त किया है । हास्य–व्यंग्य और कटुक्ति की प्रधानता के बावजूद भी इसमें यथार्थ के नाम पर भाषा में घटियापन नहीं है । इसकी भाषा सांकेतिक, प्रतिकात्मक होने के साथ ही पात्रों के गुण, स्वभाव और परिस्थिति के अनुरूप है ।

इस नाटक में देश–काल–वातावरण का चित्रण व्यंग्यात्मक और मार्मिक रूप में करने में नाटककार सफल हुआ है । इस सन्दर्भ में रीतारानी पालीवाल का कथन है-"गहराते हुए विघटित जीवन–मूल्यों के परिवेश के कारण यह दर्शक पर सघन प्रभाव छोड़ता है और हास्य–व्यंग्य के बावजूद एक तरह की अनास्था का गहरा अवसाद पाठक की चेतना पर छा जाता है ।"[2]

नाटककार ने पुलिस कमिशन, उनका पी.ए., मिनिस्टर, सक्सेना, सेठ दौलतराम, सेठ छोटेलाल, बिशनदास, अमरीकसिंह, चौधरी, जीवन, सुथरा, दीनू, शांति, शांति का पिता, जग्गा आदि प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण कुशलता से किया है । प्रस्तुत नाटक का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

शहर में दंगा होने से पूर्व ही उसका सामना करने की सारी तैयारी शासकीय कर्मचारी और मिनिस्टर साहब ने कर रखी है, इसका स्पष्ट उल्लेख पुलिस कमिशनर के इस कथन से होता है- "हमने सब इन्तजाम पहले से कर लिया है-जख्मियों का इलाज, लाशें उठवाने का काम, बेघर लोगों को राहत देने का काम, सब इन्तज़ाम पहले से कर लिया है ।... मुआवज़े का प्रबन्ध कर लिया है ।

---

1 भीष्म साहनी –मुआवज़े, पृष्ठ–7 ।

2 सं. गोपालराय –समीक्षा, अप्रैल–जून, 1994, पृष्ठ –29 ।

मिनिस्टर साहिब ने पाँच लाख रूपए हमें भेजने का वादा किया था, आपको तो मालूम है । फौरी अदायगी के लिए ।.... मरनेवालों के सगे – सम्बन्धियों को मुआवज़ा देने के लिए । कत्ल किये जाने पर दस हजार ,जख्मी को तीन सौ, मामूली चोटें आने पर कुछ नहीं, सिर्फ मरहमपट्टी । ऐसा ही मन्त्रिजीं का हुक्म है। मैं सोमवार को स्कूल बंद करवा रहा हूँ , इसी उम्मीद पर कि दंगा सोमवार तक हो जायेगा ।"[1]

कमिश्नर थानेदार से पूछते हैं कि पच्चीस प्राइवेट डॉक्टरों का इन्तजाम किया कि नहीं ? थानेदार बताता है कि केवल पाँच डॉक्टरों की मंजूरी आयी हैं । कमिश्नर कुछ सोचकर डॉक्टरों का रोजाना भत्ता पाँच सौ रूपयों की जगह सात सौ रूपये करने का सुझाव देते हैं ताकि डॉक्टर अपनी मंजूरी देने में आना–कानी न करें । वे इंजीनिअर साहब को तुरंत अपने दफतर में कम्प्यूटर लगवाने का हुक्म देते हैं ताकि हर जख्मी और मृत व्यक्ति का ब्यौरा रखा जाय । तभी अर्दली आकर बताता है कि बाहर कुछ लोग आकर पूछ रहे हैं कि मुआवज़े का दफ्तर कहाँ पर खुलेगा । कमिश्नर जवाब देते हैं कि उन्हें बता दो कि दफ्तर यही पर खुलेगा । पर वे दंगे का इन्तजार करें । उसी समय बाहर शोर होता है । कॉन्स्टेबल आकर बताता है कि फटेहाल, एक पागल आदमी आकर कह रहा था कि उसके पीछे लोग पड़े हैं , वे उसे मारना चाहते हैं। लेकिन उसने उसे धक्के मारकर भगा दिया है । सारी बात सुनकर कमिश्नर कान्स्टेबल को उस आदमी को पकड़कर थाने में लाने का हुक्म देते हैं, क्योंकि उन्हें शक है कि यह वही आदमी होगा, जो पुल के पास से लापता हो गया था और जिसके बारे में मिनिस्टर साहब तीन बार पूछ चुके हैं ।

सक्सेना सरकारी मुलाजिम के रूप में दफ्तर में मिनिस्टर के भाषण लिखता है और प्राइवेट वक्त में दो–चार विपक्षी नेताओं के भी भाषण लिखता है । इन भाषणों में उसने मिनिस्टर को 'भ्रष्टाचार का पिता' तथा ' राजनीति में नौसिखुवा' कहलवाया है और यह जानकर मन्त्रिजी बौखलाते हैं। सक्सेना के बड़े भाई और बहन भी ऐसे भाषण लिखती है ।

सेठ दौलतराम और गुमाश्ता जमीन–जायदाद के सौदे के संबंध में बातचित करते हैं । गुमाश्ता बताता है कि जमीन के अहाते की कीमत पन्द्रह सौ से गिरकर नौ सौ रह गयी है । लोग साम्प्रदायिक दंगे के डर से शहर छोड़ जा रहे हैं तथा मुहल्ले बदल रहे हैं । दंगा शुरू हो जाने के बाद सब काम ठप्प हो जाता है । इसलिए अभी जमीन–जायदाद का सौदा करना चाहिए । रूपया सैंकड़ा

---

1 भीष्म साहनी – मुआवज़े , पृष्ठ– 12 ।

कमीशन के लिए गुमाश्ता लोगों को दस नम्बरी गुण्ड़ों द्वारा डरा–धमकाकर उनके घर बिकवाता है । सेठ दौलतराम अपने बटन–फैक्टरी की जुड़वाँ सरकारी जमीन पाने में गुमाश्ता की मदद चाहता है । गुमाश्ता का जवाब है–" यह क्या मुश्किल है, सेठजी । यह तो जमीन का टुकड़ा है, आप हुक्म दे तो सारा शहर खाली करवा देंगे ।"[1] इस सरकारी जमीन पर के झुग्गी – झोंपड़ीवालों को हटाने के लिए सेठ छोटेलाल के मत से नीति से काम लेना चाहिए । "झुग्गी–झोंपड़ीवालों से दंगे के दौरान उनका कोई नुकसान न हो ' ऐसा कहकर उन्हें बटन–फैक्टरी के अहाते में आने का निमंत्रण देना चाहिए । इसलिए उन्हें प्रलोभन देकर सेठ दौलतराम को बताना होगा–" बल्कि उनसे कहे कि आप उन्हें रोजगार देंगे, उन्हें काम देंगे, उनके लिए पक्के क्वार्टर बनवा देंगे, उनके सिर पर पक्की छत होगी ।"[2] गुमाश्ता सेठ दौलतराम को इस जमीन को हथियाने के लिए करीमबख्श के साथ खड्ड़ियों के काम को साझीदारी में करने का मशवरा देता है । करीमबख्श को पूँजी की जरूरत है इसलिए थोड़ी रकम डालकर उसके साथ साझीदारी करनी चाहिए । गुमाश्ते को करीमबख्श ने ही सेठ को पास भेजा है ।

बाजार में दो–तीन दुकानदार अपनी–अपनी दुकान के चबुतरे पर बैठे बतिया रहे हैं । सुथरे के मतानुसार अब भट्टी जलेगी, खूब भुनाई होगी। तब दुकानदार नं. 1 सुथरे से पूछता है–"अगर दंगे का डर ही तो हम दुकानें बंद कर दे ?" सुथरे का जवाब है–" कपड़े की दुकानें खुली रहें कफनों के लिए, किरासीन की दुकानें खुली रहे आग लगाने के लिए, लकड़ियों के टाल खुले रहें अगले जहान पहुँचाने के लिए ।"[3] सुथरा सारे शहर में घूमता – फिरता है इसलिए वह सारी खबरें जानता है । दुकानदार उससे जानना चाहते हैं कि पुल पर जिस आदमी पर पथराव हुआ था, वह हिन्दू था या मुसलमान ? लेकिन सुथरे का जवाब है–"तेली मुहल्लेवाले कहते हैं मुसलमान था, पर रमेशनगरवाले कहते हैं हिन्दू था ।" [4] फिर सुथरा रात में उसे पड़े हुए सपने की कहानी सब को सुनाता है । सपने में उसकी भगवान के साथ बहस हुई । उसने भगवान से स्वयं को कसाई बनाने की बिनती की । दुकानदार सुथरे से पूछते हैं कि वह नये जमाने का है या पुराने जमाने का । सुथरे का जवाब है– "मैंने तो अर्ज किया ना, हुजुर अगर बलि का बकरा बनो तो तुम पुराने जमाने के अगर कसाई बनो तो नये जमाने के ।"[5] फिर सुथरा बाबू नरसिंगदास का उदाहरण देकर समझाता है कि बाबू नरसिंगदास नये जमाने का है क्योंकि वह अपनी बूढ़ी माँ को डॉक्टर के पास ले जाने के बहाने छोटे भाई के घर छोड़

भीष्म साहनी – मुआवज़े –पृष्ठ–22 ।

2 वही, पृष्ठ–23 ।

3 वही, पृष्ठ – 25।

4 वही, पृष्ठ – 27 ।

5 वही, पृष्ठ – 27 ।

आया । सुथरा दुकानदारों से पूछता है कि दुनिया में सब से बड़ी ताकत कौन–सी है ? दुकानदारों के मतानुसार सब से बड़ी ताकत हुकुमत ,पैसा, निःस्वार्थ सेवा, आत्मबल या स्वार्थ की ताकत है । सुथरे के मतानुसार सब से बड़ी ताकत बेईमानी है , भ्रष्टाचार है । सुथरा कहता है -" बेइमानी की ताकत सब से जबरदस्त ताकत है । जहाँ भ्रष्टाचार होगा, वहाँ विकास होगा, तरक्की होगी । जिन देशों ने सब से ज्यादा तरक्की की है, वहाँ सब से अधिक भ्रष्टाचार पाया जाता है । ईमानदारी के साथ काम करोगे वहीं के वहीं खड़े रहोगे, सरकार को गालियाँ दोगे, लोगों का उपदेश दोगे, भारतमाता की जय बोलोगे पर रहोगे वहीं के वही । पर अगर पैसा चढ़ाओगे , मुट्ठी गर्म करोगे, ऊपर से नीचे तक, तो गाड़ी फक–फक करती चल पड़ेगी ।.... पैसे हथेली पर रखो, हेरा–फेरी करो, कुछ हेरा–फेरी वह करेगा, कुछ हेरा–फेरी दोनों मिलकर करोगे काम चल निकलेगा ।"[1] सुथरे के मतानुसार रिश्वतखोरी मशीन के तेल के समान है, जिससे भ्रष्ट लोग फ्रांटियर मेल जैसे ,हवा से बातें करते हुए दौड़ते हैं । उसी समय फैक्टरी – मालिक वहाँ से गुजरते हैं । उनके जाने पर व्यापारी कहने लगते हैं कि ये आज बहुत बड़ी हस्ती है, जबकि एक जमाने में, उनके पिताजी की छोटी–सी परचून की दुकान थी । सुथरा उपस्थित सभी को सेठ के हाथ की सफाई की दास्तान बताता है जिसके कारण वे बड़े सेठ बने हैं सुथरा सब को फैक्टरी मालिक द्वारा पन्द्रह साल पहले पठानकोट के व्यापारियों को पाँच लाख रूपयों को ठगने की कहानी बताता है । दुकानदार सुथरे से जानना चाहते हैं कि फैक्टरी के साथवाली जमीन उन्हें मिलेगी कि नहीं ? सुथरे का अनुमान है कि जमीन सेठ को मिलेगी ,पर ... ।उसे यह 'पर ' जमीन से ज्यादा महँगा पड़ेगा ।दुकानदार सुथरे से दंगा होगा कि नहीं यह जानना चाहते हैं । लेकिन सुथरा " होगा .....पर " कहता हुआ वहाँ से चला जाता है ।

हथियारों की दुकान में सेठ छोटेलाल और गुमाश्ता अपनी कौम की खिदमत के लिए हथियार खरीदने जाते हैं । गुमाश्ता इस सौदे में भी रूपया सैंकड़ा कमीशन लेता है । छोटेलाल ढाई सौ लाठियाँ खरीदना चाहता है लेकिन दुकानदार उसे चार सौ कमानीदार छुरे खरीदने की सलाह देता है । दुकानदार के मतानुसार दुश्मनों ने बहुत–सारे हथियार इकट्ठे किये हैं । दुकानदार उसे पेशेवर लोगों के हाथों दुश्मनों को जान से मारने का जिम्मा सौंपने की सलाह देता है । वह इसके लिए इन्तज़ाम भी करवा सकता है । इस बारे में गुमाश्ता जग्गा से बात करता है । पचास रूपए प्रति आदमी के हिसाब से सौदा तय होता है । जग्गा आग लगाने का गंदा काम करने से इन्कार करता है क्योंकि इसमें हाथ काले किये, किरासीन के डिब्बे लेकर, चोरों की तरह छिप–छिपकर जाना पड़ता है । जग्गा गुमाश्ता से झुग्गी –

---

1 भीष्म साहनी –मुआवज़े पृष्ठ – 29 ।

झोंपड़ीवालों को हटाकर फैक्टरी के अंदर घुसेड़नेके काम के दस हजार रूपए माँगता है । गुमाश्ता यह काम किसी दूसरे से करवाना चाहता है । लेकिन जग्गा उसे चेतावनी देते हुए, धमकाता है -"रूपए दस हजार होंगे । तू किसी दूसरे से क्या करवायेगा, हम अपने सभी साथियों को खबर कर देंगे, कोई तेरे नजदीक नहीं आयेगा । तू समझता क्या है ? हमें जानता है या नहीं ? .... आज शाम से पहले पूरे दस हजार दुकान के मालिक के पास पहुँच जाये ।.... पैसा नहीं पहुँचा तो तेरा यह टेंटुआ दबा दूँगा ।"[1]

रामगवाया के घर में नागरिकों की बैठक होती है । इस बैठक में सेठ दौलतराम छोटेलाल, बिशनदास, केशोदास, केशोराम, रामगवाया, अमरीकसिंह और खुदाबख्श जैसे शहर के प्रतिष्ठित और धनी वर्ग के लोग शामिल हैं । शहर की फिजा बिगड़ चुकी है । दो छोटे-मोटे हादसे हो चुके हैं । दंगे के खतरे को रोकने के लिए, हर मुमकिन कोशिश करने लिए यह नागरिक मीटिंग बुलाई गई है । बिशनदास इस बैठक की अध्यक्षता के लिए शहर के बटन-बादशाह सेठ दौलतराम का नाम सुझाते हैं । 'बैठक में चाय-पानी पहले हो या बैठक की कार्रवाई पहले हो ' इस बात पर सदस्यों में बहस होती है। इतने में भगतराम आकर बताते हैं कि बहुत-सी दुकानें बंद हो गई हैं और लोग अपने-अपने घर जा रहे हैं । यह सुनते ही बैंठक की कार्रवाई शुरू हो जाती है । जब बैठक के सदस्यों में "अधिकारियों के पास एक प्रतिनिधि -मण्डल मिलें तथा सर्व-धर्म-जाति के लोगों का एक शानदार जुलूस निकाले " इन सुझावों पर विचार-विमर्श हो जाता है । तब एक आवाज बार-बार आती है कि 'अधिकरी चोर है ' । इस आवाज के कारण सब परेशान होते हैं । छोटेलाल के मतानुसार दोनों सुझाव ठीक हैं, उनमें कोई टकराव नहीं है । सभी सदस्य ,छोटेलाल के मत से सहमत होते हैं । फिर सदस्यों में 'प्रतिनिधिमंडल की सदस्य संख्या कितनी हो और नेता कौन चुना जाय' इस पर बहस होती है । बिशनदास का यह मत मान्य होता है कि सभी प्रतिनिधिमण्ड़ल के सदस्य अधिकारियों से मिलने जायेंगे । बिशनदास प्रतिनिधिमंड़ल के नेता के रूप में सेठ दौलतराम का नाम सुझाते हैं और भगतराम इसका समर्थन करते हैं । लेकिन केशोराम सरदार अमरीकसिंह को प्रतिनिधिमंड़ल का नेता चुनना चाहते हैं। इतने में किसी चीज के टूटने की आवाज आती है । कुछ लोग घबराकर बाहर दौड़ने लगते हैं। रामगवाया आकर बताता है कि चायदानी टूटी है। लोग वापस आते हैं ।

झुग्गी - झोंपड़ीवालों की बस्ती के बाहर मैदान में चौधरी, जीवन, दीनू, एक-दो बुजुर्ग, रामू और देशराज आदि बैठे बातें कर रहे हैं । चौधरी सब को सलाह देता हे कि अब सब को बिस्तर-

---

1 भीष्म साहनी -मुआवज़े- पृष्ठ- 41 ।

बोरिया बाँधकर कहीं सिर छिपाने के लिए कोई और जगह ढूँढनी चाहिए । तभी सुथरा वहाँ आ पहुँचता है । वह सब को बताता है कि दंगे के दौरान हुए जख्मी का इलाज मुफ्त में होता है, खाना भी मुफ्त में मिलता है। पिछले दंगे के दौरान जख्मी हुए दीनू, मंगलू और जीवन अभी तक ठीक नहीं हुए हैं । सुथरा उन्हें सलाह देता है कि अब जब भी दंगा भड़क उठे तो वे सीधे अस्पताल में जाकर कहे कि अब चोट लगी है ।इससे उनका इलाज मुफ्त में होगा । वह उन्हें दंगे के दौरान मिलनेवाले मुआवज़े के बारे में भी बताता है । दिल्ली के दंगे में आदमी मारा जाय तो उसके घरवालों को दस हजार रूपए मुआवज़ा मिल जाएगा परन्तु चण्ड़िगढ़ में मारे गये आदमी के घरवालों को पन्द्रह हजार रूपए मुआवज़े में मिलेंगे । दिल्ली में जख्मी हुए व्यक्ति को ढाई सौ रूपए मिलेंगे तो किसी अन्य जगह जख्मी हुए व्यक्ति को चार सौ रूपए दिये जायेंगे । मंगलू के मतानुसार सरकार को चाहिए कि मुआवज़ा एक जैसा दे, फिर कोई दिल्ली में मरे या चण्ड़िगढ़ में ।

मुआवज़े के रूपयों से बेवा स्त्रियों की जिंदगी कैसे सुधर गई इस बारे में सुथरा सब को दो घटनाएँ बताता हे । पिछले दंगे में निखट्टू हीरा रंगसाज मारा गया तो उसकी घरवाली को दस हजार रूपये मिले । इन पैसों से उसकी घरवाली ने चाय-पानी की दुकान खोली और अब दूसरा खसम करने की सोच रही है । इसी प्रकार किशनगढ़ में बलवन्ता मारा जाने पर उसकी बीवी ने मुआवज़े के रूपयों से दो कमरे बनवाये । एक कमरे में वह खुद रहती है और उसने दूसरा कमरा किराये पर दिया है । सुथरे के मुँह से मुआवज़े के पैसों से हुए लाभ की बातें सुनकर झोंपड़ीवालों के मुँह में पानी आ जाता है ।वे मुआवज़े पाने के विषय में साचने लगते हैं ।जीवन के विचारानुसार बेरोजगार दीनू, मंगलू और तेजा इस दंगे में मारे जायेंगे तो उनके घरवाले सुखी होंगे । मंगलू दंगे में मारा जाने पर उसकी बेवा स्त्री की शादी किसी और से करवा देगे । राम और देशराज मंगलू की बेवा से शादी करने की अपनी इच्छा प्रकट करते हैं तो सब हँसते हैं ।

जीवन दीनू को समझाता है कि तू मरने को तैयार हो जा । जख्मी पाँव लेकर तू रिक्शा नहीं चला पाता । रिक्शा चलाने से बुखार आने पर तेरे घर में चूल्हा तक नहीं चलता । ऐसे में तू रिक्शा चलाते-चलाते मरने से अच्छा होगा कि तू दंगे में मरे । इस हालत में तेरे घरवालों का फायदा होगा । लेकिन दीनू नहीं मानता । चौधरी कहता है कि यह काम वही आदमी कर सकता है, जिसे अपने घरवालों की चिंता और जिम्मेदारी हो । मरने से पहले ब्याह रचाने की शर्त पर दीनू दंगे में मारा जाने को तैयार हो जाता हे । दीनू की शर्त सुनते ही बस्ती के तीन बुजुर्ग अपनी-अपनी बेटी दीनू के साथ ब्याहने को तैयार हो जाते हैं ।उनके मतानुसार बेटी के विधवा हो जाने पर मुआवज़े के पैसों से फिर से बेटी का ब्याह दूसरी अच्छी जगह कर देंगे । दीनू शांति के साथ ब्याह करने की अपनी इच्छा

जाहिर करता है । शांति के बाप को समझाते हैं कि दीनू को मारने की जिम्मेदारी उनकी है। दीनू की शादी शांति के साथ होते समय गोली चलने की आवाज आती है । शादी की रस्म पूरी होते ही दीनू बात बदलकर कहता है कि वह नहीं मरेगा । दीनू की बातें सुनते ही बुजुर्ग और जीवन उसे मारने दौड़ते हैं ।

पुलिस कमिश्नर के दफ्तर में सेठ दौलतराम ,छोटेलाल,अमरीकसिंह ,बिशनदास आदि नागरिक समिति के लोग जाते हैं ।' दंगे की रोक–थाम के लिए पुलिस क्या कदम उठाती है "यह बात वे जानना चाहते हैं । बिशनदास कमिश्नर से पूछते हैं कि वे गुण्डों को तो पकड़ सकते हैं । लेकिन पुलिस कमिश्नर उन्हें बताते हैं कि देश की प्रशासन व्यवस्था नेताओं के हाथ की कठपुतलियाँ हैं । वे स्पष्ट शब्दों में कहते है–" पकड़ सकते हैं, पकड़ा भी करते थे । पर एक गुण्ड़े को पकड़ो तो दस सयासतदान उसकी जमानत देने के लिए पहुँच जाते हैं । फिर क्या मालूम ,आज जिसको गुण्ड़ा समझ के पकडें कल वह नेता बन जाये ? आप पुलिस की दिक्कतों को भी समझा कीजिए ।"[1] कमिश्नर उन्हें समझाते हैं कि दंगा शुरू हो जाने पर पुलिस का काम शुरू हो जाता है, जैसे – चौकियाँ बिठाओं, .कर्फ्यु लगाओं,लाशें उठवाओं , जख्मियों को अस्पताल पहुँचाओ, मुआवज़े दे दो आदि ।

बिशनदास सिक्युरिटीवाले दफ्तर के बारे में पूछते हैं । थानेदार बताता है कि सिक्युरिटीवाले सिपाही वी.आई.पी.साहिबान की डयूटी पर होने के कारण उनके दफ्तर में कोई नहीं होता । उसी समय लाउडस्पीकर पर मंत्रिजी की आवाज सुनाई देती है–" नगरवासियों ,हमवतनों,एक बार फिर हमारा प्यारा नगर दंगों की चपेट में आ गया है .... फिर से खून की छींटे शहर की दर–ओ–दीवार पर उड़ने लगे हैं ।सैंकड़ों घर आग की नजर किये जा रहे हैं । अनाज मण्ड़ी में आग के शोले उठ रहे हैं ..."[2] यह सुनकर नागरिक प्रतिनिधिमंडल के सदस्य और कमिश्नर हैरान होते हैं । शहरी घबरा जाते हैं और उनमें भगदड़ मच जाती है ।

मंत्रि की आवाज सुनकर कमिश्नर थानेदार को ' दंगा हुआ कि नहीं " यह जानने को कहते हैं । थानेदार और कमिश्नर का पी.ए.,दोनों ,बताते हैं कि दंगा नहीं हुआ । उसी समय मंत्रिजी का भाषण लिखनेवाला सक्सेना भागता हुआ आकर बताता है कि तफसीली गलती के कारण दंगे के दौरान पढ़ा जानेवाला बायान नं.2 पढ़ा गया है । तभी चीफ सेक्रेटरी का फोन आने पर कमिश्नर उन्हें तसल्ली देते हैं कि दंगा नहीं हुआ ।" गलती किसीकी है," इस बारे में वे तहकीकात करेंगे । सक्सेना मंत्रिजी

---

1 भीष्म साहनी – मुआवज़े , पृष्ठ– 59 ।

2 वही– पृष्ठ– 61 ।

का नया भाषण लिखना है कि शहरवासी किसी गलतफहमी का शिकार न हो जाए । वे शहर में शांति बनाये रखें । कमिश्नर यह भाषण सक्सेना को अपनी आवाज में टेप करने को कहते हैं क्योंकि मंत्रिजी दौरे पर गए हुए हैं ।एक सिपाही आकर यह खबर सुनाता है कि थाने में मुआवज़े के पाँच लाख रूपयों की डकैती हो गयी है । कमिश्नर थानेदार को फौरन बुलाते हैं । मंत्रिजी के बयान के कारण दंगे की पूछताछ करनेवाले फोन कमिश्नर को आने लगते हैं ।

शांति का बाप सुथरे से शिकायत करता है कि उसने उसके साथ धोखा किया है । अभी तक दीनू नहीं मारा गया है और दंगा भी नहीं हुआ है । वह दीनू से परेशान हो गया है । दीनू उसके घर में एक घरजमाई की तरह रहता है और मुफ्त की रोटियाँ तोड़कर कुप्पा हो रहा है। शांति उसके जख्मी पाँव की रोज मरहमपट्टी करती है । उसका घाव भरने लगा है । सुथरा इस बारे में शांति की राय जानना चाहता है । शांति का बाप बताता है कि दीनू ने उस पर जादू कर दिया है । उसी समय जीवन और चौधरी आ जाते हैं । शांति का बाप उनसे दीनू की शिकायत करता हुआ कहता है कि दीनू को उसके घर से निकालो या उसका कत्ल करवाओं ।उसी समय एक आवाज आती है-"थाने में चोरी हो गयी । दिन–दहाड़े डाका । पूरे पाँच लाख चोरी हो गये । मुआवज़े की सारी रकम चोर उड़ा गये ।"[1] यह सुनकर शांति का बाप रोने–चिल्लाने लगता है कि वह बर्बाद हो गया । अब दंगा नहीं होगा,दीनू नहीं मारा जाएगा और उसे मुआवज़ा नहीं मिलेगा । सुथरा उसे समझाता है कि सरकार को तो कोई उठा नहीं ले गया । लेकिन शांति का बाप सुथरे को मारने दौड़ता है ।

जग्गा और गुमाश्ता दोनों बातें कर रहे हैं । जग्गा गुमाश्ता का गला पकड़ता है तो उसकी दोनों आँखें बाहर आती हैं । जग्गा कहता है कि तू लोगों को मरवाने मेरे पास आता है लेकिन तुझे मरवाने कोई मेरे पास नहीं आता । गुमाश्ता उसे झुग्गी – झोंपड़ीवालों की जमीन खाली करवाने समय,अलग पैसे लेकर दो–चार आदमी मारना चाहता है । गुमाश्ता जग्गा की बातें मान जाता है । उसी समय वहाँ एक फटेहाल, नंगे सिर, छतरीवाला आकर एक कोठरी में घूस जाता है । लोग उसे मारने दौड़ते थे । जग्गा, हाथ में कुल्हाड़ी लेकर उसे ललकारता हुआ कहता है -" निकल बाहर । घुसकर छिपा बैठा है । तेरी मैं .... निकल बाहर । मैं तेरी टाँगे चीर दूँगा । मैं अंतड़ियाँ निकाल दूँगा । टुकडे टुकड़े कर दूँगा ।" [2] छतरीवाला कोठरी से निकलकर भागता है और जग्गा उसे ललकारते हुए, उसका पीछा करता है ।

---

1 भीष्म साहनी –मुआवज़े , पृष्ठ – 67 ।

2 वही, पृष्ठ – 69 ।

13374 A
BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

शांति और दीनू ,दोनों आते हैं । दंगा शुरू हुआ है वह जानकर दीनू मरने के लिए निकला है । वह शांति को समझाता है कि उसके मारे जाने पर फौरन चौधरी को इत्तल्ला करना, नहीं तो वह मुआवज़े के पैसों से हाथ धो बैठेगी । दीनू शहर के अन्दर मारकाट ज्यादा होगी यह सोचकर शहर में जाकर मरना चाहता है । लेकिन शांति उसे ऐसा करने से रोकती है । वह चाहती है कि दीनू उसके नजदीक ही मरें । अगर वह शहर में मर जाये तो वह अकेली उसकी लाश कैसे ढूँढ़ पायेगी ? दीनू उसे समझाता है कि वह फैक्टरी में लौट जाये । अगर वह मारा गया और मारनेवाले शांति को भी उठा ले गये तो कुछ फायदा न होगा । वह उसे अपने सिर की सौंगध देकर जाने को कहता है । शांति वापस चली जाती है ।

अँधेरे में जग्गा दीनू पर कुल्हाड़ी फेंकता है लेकिन कुल्हाड़ी उसे नहीं लगती । दीनू जग्गा को बताता है कि वह कुल्हाड़ी उसे नहीं लगी । जग्गा दीनू से जानना चाहता है कि वह मरने शहर क्यों जा रहा है । दीनू उसे बताता है कि यह उसका प्राइवेट मामला है । वह मारा गया तो उसकी घरवाली को मुआवज़ा मिलेगा । दीनू की बातें सुनकर जग्गा को लगता है कि उसका दिमाग ठिकाने पर नहीं है दीनू जग्गा से कहता है कि या तो वह उसे मार डाले या वह उसे शहर में मरने जाने दे । जग्गा उसे अपने साथ लिये जाता है । तभी छतरीवाला आता है । जग्गा उस पर कुल्हाड़ी फेंकता है । कुछ देर बाद गोली चलने की आवाज आती है।गोली चलने की आवाज सुनकर जीवन, चौधरी और बस्ती के दो–तीन और आदमी आ जाते हैं। शांति जीवन को बताती है कि दीनू मारा गया है । सुथरा दीनू को आवाज देता है, पर कोई जवाब नहीं देता । सभी मान जाते हैं कि दीनू मारा गया है । चौधरी पूछता है कि तेजा और मंगलू कहाँ हैं ? उन्हें भी चलता करना चाहिए । यह मौका हाथ से जाने न पाये । जीवन के मतानुसार जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी दीनू की लाश हाजिर कर, मुआवज़ा हथियाना चाहिए । चौधरी के विचार से दीनू की फाईल खुल जाने पर आधा काम पूरा हो जाएगा । सुथरा दीनू की लाश बीस पेड़ों के नीचे ढूँढ़कर आता है पर उसे लाश नहीं मिली है । चौधरी शांति के बाप को दीनू के मरने पर बधाई देता है । जीवन और शांति के बाप को शक होता है कि शायद सुथरे ने ही मुआवज़े के लोभ में दीनू की लाश कही छुपाई है।दीनू के मरने पर शांति रोती रहती है ।सभी मुआवज़े के दफ्तर जाते हैं ।

पुलिस कमिश्नर के दफ्तर में, कमिश्नर थाने में हुई डकैती की तहकीकात कर रहे हैं । वे थानेदार से पूछते हैं कि उसे कब पता चला कि थाने में चारी हो गयी है ? थानेदार जवाब देता है

कि जब वह ड्यूटी पर थाने का राऊंड लगा रहा था , तब उसने मालखाने का खुला हुआ ताला, लटकता देखा था । थानेदार उन्हें बताता है कि मालखाने की हिफाजत के लिए गोरखा चौकीदार या शिकारी कुत्ता अल्सेशियन या बुलडॉग रखना चाहिए । थानेदार का मशवरा सुनकर कमिश्नर बौखलाते हैं ।वे उसे पूछते हैं कि उसने चोरी की वारदात जानते ही क्या कार्रवाई की ? ' दस बजे बाजाब्ता तौर पर, दफ्तर खुलने तक , तीन घण्टे थानेदार लटकाता हुआ ताला देखता रहा '' यह जानकर कमिश्नर गुस्से से लाल होते है । तभी एक कान्स्टेबल आकर बताता है कि बाहर लोग लम्बी लाइन लगा कर , मुआवज़ा मॉंगने आये हैं । कमिश्नर गुस्से से पूछते हैं कि यहॉं दंगा हुआ ही नहीं तो लोग मुआवज़े कैसे मॉंगने चले आये ? वे कान्स्टेबल को उन लोगों को हथकड़ी लगाकर जेलखाने में डालने की धमकी देने को कहते हैं। पर बाद में वे उसे लोगों को आराम से समझाने को कहते हैं कि वे लोग दंगे का इंतजार करे दंगा हो जाने के बाद मुआवज़ा दिया जाएगा । कॉन्स्टेबल कमिश्नर को समझाता है कि ये लोग पिछले दंगे का मुआवज़ा मॉंगने आये हैं । कमिश्नर बताते हैं कि पिछले मुआवज़े नहीं दिये जायेंगे । कॉन्स्टेंबल कमिश्नर से आग्रह करता है कि वे खुद ही लोगों से बात करें क्योंकि उसे लोगों से बात करने का ढंग नहीं आता । कमिश्नर उसकी बात मान जाते हैं ।कॉन्स्टेबल पॉंच–सात यतीम बच्चों को दरख्वास्ती के रूप में उनके सामने पेश करता है । कमिश्नर बच्चों को समझाते हैं कि उन्हें मुआवज़ा नहीं मिलेगा । वे बच्चों को ' कम्प्युटर द्वारा हर मृत और जख्मी का ब्यौरा कैसे रखा जाएगा , मुआवज़ा कैसे दिया जाएगा '' ये बातें बताते है । बच्चे उनकी बातें सुनकर तालियॉं बजाते हैं ।

थानेदार आकर बताता है कि बाहर खड़े लोग जुलूस निकालने की बात कर रहे हैं । कमिश्नर कहते हैं कि उन्हें दस बार जुलूस निकालने दो । शायद इसीसे दंगा हो जाए । तब बाहर से आवाज आती है कि जब तक पिछले मुआवज़े नहीं मिलेंगे , हम नया दंगा नहीं होने देंगे । कमिश्नर यह सुनकर कड़कते हैं कि ये कौन होते हैं, दंगा रोकनेवाले ? कॉन्स्टेबल आकर कमिश्नर को बताता है कि बाहर खड़े लोगों का कहना है कि उन्होंने मिनिस्टर साहब का मुआवज़े का ऐलान सुना है ।यह सब मिनिस्टर साहब के गलत बयान की मुनादी के कारण हुआ है , ऐसा कमिश्नर कहते हैं। चौधरी, जीवन शांति का बाप, मंगलू और तेजा आकर दीनू की मौत का मुआवज़ा मॉंगते हैं । कमिश्नर लड़की के बारे में पूछते हैं ।चौधरी जवाब देता है कि लड़की घरवाले की लाश ढूँढ़ने गयी है । यह सुनकर कमिश्नर उन्हें पहले लाश बरामद करने को कहते हैं । वे उन्हें बताते हैं कि अभी तक कोई दंगा नहीं हुआ है। तुम लोग यहॉं से चले जाओ । चौधरी उन्हें दीनू की फाईल करने को कहता है पर वे नहीं मानते ।

तभी बाहर से एक आवाज आती है-" हम मुआवज़ा देंगे । पिछले दंगों का भी देंगे ।हाँ,हाँ, जो लोग जख्मी हुए थे,उन्हें भी,जो मारे गये थे उनके घरवालों को भी । इन बच्चों को भी । ? यह सुनकर कमिश्नर हैरान होते हैं ।चौधरी और अन्य लोग चले जाते हैं । "जिंदाबाद ,दानवीर चौधरी जगन्नाथ जिंदाबाद " की घोषणाएँ सुनाई देती हैं । कमिश्नर थानेदार से पूछते हैं कि मिनिस्टर साहब आये हैं क्या ? थानेदार के नकार पर वे उसे पूछते हैं कि क्या उनका बेटा या दामाद आया है ? थानेदार इन्कार करते हुए कमिश्नर के कान में कुछ कहता है । तब कमिश्नर सावधान होकर सब मामले की तहकीकात करने का हुक्म देते हैं ।

गुमाश्ता जग्गा की बाट जोहता है । जग्गा अब चौधरी जगन्नाथ बनकर आता है तो गुमाश्ता उसे पहचान नहीं पाता । वह नहीं मानता कि जग्गा ने अपनी जेब से मुआवज़े बाँटे हैं । जग्गा अपनी जेब से एक छोटी थैली निकालकर गुमाश्ते को देता है । थैली देखकर, गुमाश्ता यह पहचानकर चौंकता है कि यह थाना-डाके की थैली है । जग्गा उसे धमकाता है कि उसने फिर उसे जग्गा कहा तो वह उसकी जबान खींचेगा और टेंटुआ दबायेगा । गुमाश्ता जानना चाहता है कि जग्गे ने थाने में डाका कैसे डाला ? जग्गा उसे सतर्क करता है कि यह बात किसी को मालूम न होने पाये । जग्गा उसे बताता है कि वह असेम्ब्ली का चुनाव लड़ना चाहता है और गुमाश्ते को फैक्टरीवाले सेठ के पास जाकर नामजदगी के फॉर्म पर सेठ के दस्तखत लाने हैं । गुमाश्ता जग्गे से पूछता है कि मेम्बर बन जाने पर क्या जग्गा दादागिरी छोड़ेगा ? जग्गा इन्कार करता है क्योंकि मेंबर बन जाने पर दस काम अपने आप हो जायेंगे ।

चौधरी जगन्नाथ के घर पर एक दररव्वास्ती आकर मिलता है । पिछले आठ सालों से 'किरायेदार ने उसे परेशान कर रखा है और पाँच सालों से मुकदमा चल रहा है ।वह चाहता है कि किरायेदार मकान खाली कर दे । जग्गा पाँच दिनों में उसका मकान खाली करवाकर देने को तैयार होता है । वह उसकी चुनाव में जिताने के लिए सहायता माँगता है । दरख्वास्ती जग्गे की सहायता करने की बात मानता है ।उसके जाने के बाद पति-पत्नी आते हैं । श्रीमती लाजवंती को प्रिंसिपल साहब नौकरी देने में आना-कानी कर रहे थे ।जग्गा टेलीफोन पर प्रिंसिपल को धमकाता है कि उन्हें नौकरी करनी है या नहीं ? इस श्रीमती जी को कोई भी तरीका ढूँढ़कर नौकरी देकर मुझे खबर करना । तभी सुथरा आकर जग्गा की ताजपोशी करते हुए कहता है कि मेने कहा था कि देश के कर्णधार आ रहे हैं ।अब ये पन्द्रहवें अवतार बनकर, मनुष्य देह धारण किये आये हैं । अब सब काम पूरे हो जायेंगे । जग्गा

---

1 भीष्म साहनी - मुआवज़े , पृष्ठ - 83-84 ।

गुमाश्ते से सुथरे का परिचय जानना चाहता है । गुमाश्ता जग्गा को बताता है कि यह जमाने की, कौम की, हम सब की नब्ज देखता है । सुथरे के मतानुसार जग्गे का सितारा बुलंद है । वह राज करेगा, लाखों–करोड़ों में खेलेगा । तभी सक्सेना आकर बताता है कि वह भाषण लिखकर देता है । गुमाश्ता उसे जग्गे का चुनाव का भाषण लिखने का काम सौंपता है । सक्सेना के जाते ही जीवन ,चौधरी ,शांति का बाप और शांति अंदर आती है । जग्गा अपने भाषण में सुग्गी–झोंपड़ीवालों को आवश्वासन देता है कि चुनाव जीतने पर बस्ती के लोगों के लिए वह पक्के घर बनवायेगा । सेठ दौलतराम , छोटेलाल, अमरीकसिंह , खुदाबख्श आदि आते हैं । सेठ दौलतराम और अमरीकसिंह, दोनों जग्गा को हार पहनाते हैं । जग्गा का ध्यान शांति की तरफ जाता है । जग्गा उसका परिचय जानना चाहता है । चौधरी बताता है कि यह दीनू रिक्शावाले की घरवाली है । दीनू मारा गया है, पर उसकी लाश नहीं मिली है । जग्गा मुस्कारकर कहता है कि लाश की क़ोई जरूरत नहीं है, उसे मुआवज़ा मिल जाएगा । वह शांति से पूछता है कि वह उसका क्या लगता है ? शांति गुस्से से कहती है वह उसका कुछ नहीं लगता । जग्गा शांति से पूछता है कि वह पगलेट तेरा आदमी था क्या ? अगर वह मारा नहीं गया तो हम वह काम पूरा करेंगे । इतने में दीनू रिक्शा लेकर वहाँ आता है । शांति उसे कहती है कि यहाँ से जल्दी चलो । वे दोनों वहाँ से चले जाते हैं । जग्गा उनके पीछे चिल्लाता है कि भागकर कहाँ जाओगे ? सुथरा कहता है कि इश्क–पेचा लड़ा है, अब शांति किसी और को नहीं मिलेगी ।

कुछ नागरिक हाथों में फुलों के हार ले आते हैं । वे जग्गे के गले में हार डालते हैं:। जग्गा सब के सामने एक भाषण देता है कि उसके जीवन का केवल एक ही लक्ष्य है सेवा करना । चुनाव जीतने पर वह सब के लिए पक्के घर बनवा देगा । इस सरकार के भरोसे पर नहीं रहना चाहिए। दिन–दहाड़े थाने में डकैती हुई और अभी तक मुजरिम नहीं पकड़ा गया है । जग्गे के भाषण के दौरान पुलिसवाले आकर उसे चारों तरफ से घेर लेते हैं । गुमाश्ता घबराकर जग्गे को बाहर निकलने की सूचना करता है । लेकिन उन दोनों का बाहर निकलना नामुमकिन है । सेठ दौलतराम थानेदार से उनके आगमन का कारण पूछते हैं । थानेदार बताता है कि दानवीर चौधरी जगन्नाथ जी की सुरक्षा के लिए उन्हें तैनात किया गया है । उनके वहाँ रहते चौधरी जी का कोई बाल तक बाँका नहीं कर सकता । सुथरा आकर गाता है " ––

"मैं कोई झूठ बोलिया ?
मैं कोई कुफर तोलिया ?

कोय ना, भाई कोय ना, भाई कोय ना ?"[1]

'मुआवज़े '' नाटक के संबंध में रीतारानी पालीवाल लिखती है-" चरमराई प्रशासनिक व्यवस्था और विकृत होते सामाजिक संबंधों को '' मुआवज़े ' तीखे व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करता है दुकानदार ,व्यापारी , बिचौलिया , अफसर, नेता, सिपाही ,दरवेश, रिक्शाचालक, झुग्गी –झोंपड़ीवासी आदि के व्यवहार के माध्यम से विभिन्न वर्गों की मानसिकता उजागर होती है ।.... मानवीय संबंधों के विघटन का वास्तविक रूप उस समय दिखाई देता है जब मुआवज़े की रकम पाने के लोभ में लोग सगे–संबंधियों की मौत का इंतजार करने लगते हैं । एक तरह से हर चीज का सौदा होने लगता है – जीवन का मौत का, इन्सानी रिश्तों का,वैवाहिक संबंधों का । पैसा सभी रिश्तों से ऊपर जगह पाता है .... इन्सानियत का कोई मेल दूर–दूर तक नजर नहीं आता ।"[2]

निष्कर्ष --

भीष्म साहनी के चौथे नाटक 'मुआवज़े 'में ' आजकल शहर में हो रहे साम्प्रदायिक दंगों से उत्पन्न परिस्थिति, प्रशासन एवं लोगों द्वारा दंगे की रोक–थाम के प्रयास ,दंगे के मुआवज़े हथियाने के लोभ में प्रशासन, नेता एवं लोगों द्वारा किए गए प्रयत्न ,इन्सानी रिश्ते के ऊपर पैसे को जगह मिलना और अंत में एक गुण्ड़ा सियासतदाँ बन जाना ' इन सब बातों का यथार्थ, मार्मिक और व्यंग्यात्मक वर्णन पाया जाता है । नाटक में पुलिस कमिश्नर, मिनिस्टर ,सक्सेना,सेठ दौलतराम,छोटेलाल, गुमाश्ता ,दीनू रिक्शावाला, शांति तथा जग्गा आदि प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण यथार्थ,सजीव और व्यंग्यात्मक रूप में किया है । प्रस्तुत नाटक में आज की सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थिति का यथार्थ चित्रण पाया जाता है । इसमें देश–काल–वातावरण का यथार्थ अंकन हुआ है । नाटककार अपने इस उद्देश्य को व्यक्त करने में सफल हुआ है कि दंगे के दौरान खत्म हो जानेवाली जिंदगियों का मुआवज़ा दिया जा सकता है पर मानवीय रिश्तों का मुआवज़ा हम कैसे चुकायेंगे ? नाटक रंगमंचीय दृष्टि से भी सफल है ।

---

1 भीष्म साहनी –मुआवज़े , पृष्ठ –96 ।

2 सं. गोपालराय –समीक्षा, अप्रैल–जून 1993, पृष्ठ– 29 ।

2.5 **'रंग दे बसन्ती चोला'--**

भीष्म साहनी की पाँचवी नाट्यकृति ' रंग दे बसन्ती चोला ' भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम की घृणित घटना "जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड 'को आधार बनाकर लिखी गई है । इसलिए इस नाट्यकृति को 'ऐतिहासिक नाटक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है । तीन अंकी इस नाट्यकृति में जलियाँवाले बाग हत्याकाण्ड के पूर्व के पंजाब का वातावरण ,जलसे ,जलसों पर पाबन्दी तथा हड़ताल आदि का यथार्थ वर्णन पाया जाता है । इसके साथ ही अंग्रेजी प्रशासन द्वारा लोगों पर लिए गए अत्याचार, अंग्रेजों के पिट्टू हिन्दुस्तानियों का बर्ताव, जलियाँवाले बाग का हत्याकाण्ड, हत्याकाण्ड के बाद डायर का बर्ताव, लोगों का लाशें ढूँढना, डायर ,गवर्नर जनरल ओ'ड्वायर और आवाज की बातचित आदि सब बातों का वर्णन नाट्यकृति की कथावस्तु में पाया जाता है ।

प्रस्तुत नाट्यकृति में ऐतिहासिक देश-काल-वातावरण का यथार्थ चित्रण सफलता से हुआ है। सर ओ'ड्वायर जनरल डायर, माइल्स इर्विंग, प्लोमर, किरचिन, मेसी तथा ब्रिग्ज जैसे ऐतिहासिक पात्रों का चरित्र-चित्रण यथार्थ की ठोस भूमि पर किया गया है । लुईस , मिस शेरवुड, वाथुर इन अंग्रेजी पात्रों का चरित्र-चित्रण नाट्यकार ने सजीव और सफलता से किया है । हेमराज, रतनदेवी, ईशरो, किश्ना, सरदार ,रायबहादुर , खानबहादुर और कांग्रेस कार्यकर्ता आदि हिन्दुस्तानी पात्र ऐतिहासिक नहीं है पर ऐतिहासिक घरातल पर उनका चरित्र-चित्रण नाट्यकार ने यथार्थता और जिवंतता से किया है । नाट्यकार ने 'आवाज " नामक एक पात्र की सृष्टि की है ।यह आवाज डायर तथा पंजाब के तत्कालीन गवर्नर सर माइकल ओ'ड्वायर की आत्मा की आवाज है, जो उन दोनों को जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के बारे में विविध प्रश्न पूछकर उन दोनों को दोषी ठहराती है । प्रस्तुत नाट्यकृति का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है --

जलियाँवाले बाग हत्याकाण्ड के पहले पंजाब में जलसे होते रहते हैं । रौलेक्ट बिल पास हो चुका है । म.गांधी इसके खिलाफ लड़ रहे है । पंजाब में होनेवाली हड़ताल, जुलूस और जलसे रोकने के लिए मुकम्मिल कार्रवाई करने के लिए अमृतसर का डिप्टी कमिश्नर माइल्स इर्विंग ,अमृतसर की डिप्टी सुपरिण्टेण्डेट पुलिस प्लोमर, पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर सर माइकल ओ'ड्वायर ,खानबहादुर और रायबहादुर के बीच एक बैठक होती है । इस बैठक से पहले माइल्स इर्विंग ने ब्रिटिश सरकार की ओर से आंदोलनकर्ता डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल को एक हुक्मनामा भेजा है । इस हुक्मनामा के आदेश के अनुसार वे दोनों भाषण नहीं दे सकते । प्लोमर के मतानुसार उन्हें जेल में डालना चाहिए ।

इर्विंग प्लोमर को बताता है कि उसे होम डिपार्टमेन्ट की ओर से एक रिपोर्ट मिली है । जंग के दिनों में करीब आठ हजार इन्कलाबी जिनमें पंजाबी ज्यादा थे, लुक–छिपकर गड़बड़ी मचाने हेतु छावनियों में पहुँच गये थे ।ये इन्कलाबी गदर पार्टी या उस जैसी अन्य पार्टियों से जुड़े हुए थे । आज वे पंजाब में लुक–छिपकर रह रहे हैं । उनमें से बहुत–से इन्कलाबी जलियाँवाले बाग के जलसों में भी जाते होंगे । इससे पंजाब में एक बहुत बड़ा संकट उठ खड़ा हुआ है ।

प्लोमर और इर्विंग ने रायबहादुर और खानबहादुर ,इन दो हिन्दुस्तानियों को उनसे लाभ उठाने के लिए बैठक में आमंत्रित किया है । प्लोमर बताता है कि उसने रायबहादुर से पूछा था कि वे कांग्रेसियों को काबू में कैसे रखेंगे ? रायबहादुर ने जवाब दिया था कि वे ब्रिटिशों की तरकीब से ही कांग्रेसजनो को मुट्ठी में रखेंगे । वे इलाके के सरगना को प्रलोभन देंगे कि साहिब बहादुर से तुम्हें खिताब देने की सिफारिश करेंगे, पर तुम कांग्रेसी लोगों का साथ छोड़ दो । इर्विंग रायबहादुर जैसे लोगों को और बढ़ावा देने के पक्ष में नहीं है । उसके विचारानुसार आंदोलनकर्ता के साथ सीधा राब्ता कायम करना होगा । उसने मुसलमान कार्यकर्ता, डॉ. किचलू को अपनी ओर करने की नाकामयाब कोशिश की थी।

पंजाब में अमन–शांति कायम करने के लिए बुलायी गयी बैठक में लाहौर से खास तौर पर पंजाब का लेफ्टिनंट गवर्नर सर माइकल ओ'ड्वायर आया हुआ है । वह बैठक में बताता है कि कल से गांधी का सिविल डिसोबोडियेन्स मूवमेन्ट शुरू होगा । कल का दिन वह सारे मुलक में "काला इतवार " के नाम से मनायेंगे । महायुद्ध के दिनों में पंजाबी फौजी ने ब्रिटिश सरकार की काफी मदद की थी इसलिए उसे पंजाबी जनता पर नाज है । पर आज इस बात को लेकर बड़ा खेद है कि कुछ पंजाबी लोग गदर पार्टी या अन्य पार्टियों के बहकावों में आकर, सिविल नाफरमानी की जामा पहनकर, बगावत कर रहे हैं । सियासी आंदोलनकर्ता अपने जुलूस और जलसों के लिए खुद जिम्मेदार होंगे । ब्रिटिश सरकार खुलकर इस खतरनाक आंदोलन का विरोध कर उसे खत्म करेगी ।

खानबहादुर ,जो गुजराँवाला के निवासी हैं, गवर्नर साहब को यकीन दिलाते हैं कि वे अगले दो दिन के लिए अमृतसर में रहेंगे और शहर में हड़ताल और जलसा न होने के लिए पूरी कोशिश करेंगे। जंग के दिनों में उनके शहर से 11,765 जवान फौज में भर्ती हुए थे । उनकी मर्जी के बिना गुजराँवाला में चिड़िया तक नहीं उड़ सकती । रायबहादुर तजवीज पेश करते हैं कि अमृतसर के लिए रवाना हुए गांधी को बीच रास्ते में ही रोककर गिरफ्तार किया जाए ।

सर माइकल ओ'ड्वायर को यह बात परेशान कर रही है कि हिन्दू और मुसलमानों के

बीच मेल–मिलाप हो रहा है । प्लोमर के मतानुसार शहर में मुनादी कर दी जाए कि हड़ताल मनसूख कर दी गयी है । इर्विंग इस बात से सहमत नहीं होता । वह प्लोमर को सलाह देता है कि यह काम रूपोश खुफिया पुलिसवालों से करवाओ । वह रायबहादुर को व्यापारियों को समझाने को कहता है कि वे अपनी दुकानें बंद न करें ।शायद उन्हें बाहर से पैसा मिलता है । यह जुर्म है ।

इस बैठक के दूसरे दिन, ईशरों और रतनदेवी आपस में बातचित कर रही हैं । दोनों हमसायत हैं। दोनों के घरों के पास ही गुरूद्वारा और जलियाँवाला बाग है । इसलिए सुबह उनके कानों में गुरूवाणी पड़ती है तो रात को सोने के समय भाषण सुनाई पड़ते हैं । दोनों के पति सुबह गुरूद्वारे जाते हैं और शाम को जलियाँवाले बाग के जलसे में जाते हैं । दोनों केवल दुकान पर नहीं जाते । इसलिए ईशरो और रतनदेवी काफी परेशान हैं । ईशरो के पति को पहले पहलवानी का शौक था ,तब वह दुपहर को दुकान पर से दंगल देखने जाता है ।। ईशरो ने संग–सियापे जाने की तरकीब लड़ाकर, उसका दंगल देखने जाने का शौक छुड़ाया था । वह रतनदेवी को किसी तरकीब से अपने पति को ठीक करने को कहती है ।पर रतनदेवी कहती है कि उसके पति पर मुल्क की आजादी का अमल है ।घर में बैठे रहने पर भी वह मुल्क की बातें करता रहता है । अब उसे भी खिड़की में बैठकर भाषण सुनना अच्छा लगता है । ईशरो कहती है कि शादी के खुमार के कारण शुरू–शुरू में घरवाले की हर बात अच्छी लगती है । वह पहले कुश्ती लड़कर आए हुए अपने पति को स्वयं नहलाती थी । पर अब उसे अपने घरवाले की पहलवानी एक आँख भी नहीं भाती । तभी किश्ना टीन का कनस्तर बजाते हुए मुनादी करता है । वह आठ–नौ साल का लड़का है । उसे ईशरो ने पाला है क्योंकि लाम पर प्लेग के दिनों में उसके माँ–बाप मर गये थे । वह मुनादी करता है कि आज सोमवार शाम को ठीक साढ़े चार बज़े जलियाँवाले बाग में एक आम पब्लिक जलसा होगा जिसमें रौलेट बिल का पर्दाफाश किया जाएगा । वह देशभक्ति पर गीत गाता हुआ आँगन का चक्कर लगाने लगता है ।

किश्ना उन्हें बताता हे कि रामनवमी की झाँकियों में वह वर्दी पहनकर जाएगा । इतने में रतनदेवी का पति हेमराज आ जाता है । वह बहुत खुश है ।'सारे शहर में हड़ताल सफल हो रही है' यह बताकर वह दुबारा बाहर जाने लगता है तो रतनदेवी उसे रोकना चाहती है । वह दोपहर के जलसे में जाना चाहता है । फिर वह कुछ क्षण रूककर जयमलसिंह में खानबहादुर अब्दुल क्यूम की लोगों ने क्या दुर्दशा की वह बताता है । खानबहादुर मंसाराम की किरयाने की दुकान की एक ताक खुली देखकर खुश हुआ था। लेकिन उसकी आँखों के सामने ही मंसाराम ने दुकान को ताला लगाया ,यह देखकर वह बौखलाया था । पर लोगों ने उसकी तोंद थपथपाते हुए, गाल को चूमते हुए,ठुड्डी को हाथ

लगाते हुए उसे कटरे के बाहर छोडा । उसी समय रतनदेवी का इन्कलाबी भाई, सरदार सोहनसिंह पुलिस से बचने बहन के घर आ जाता है । रतनदेवी पति और भाई को लस्सी पिलाती है । इतने में हेमराज के साथी उसे बुलाने आते हैं । हेमराज उनके साथ चला जाता है । सोहनसिंह अपने दो साथी , मेहरसिंह और जोधसिंह की मृत्यु की याद करके फफककर रोता है । उसे गांधी जी के अहिंसात्मक मार्ग पर विश्वास नहीं है । वह कहता है -"देश को आजाद कराना हो तो ऐसे ही होगा । जान हथेली पर रखकर।

चरखा कातने से, नारे लगाने से कुछ नहीं होगा । कभी उपवास कर रहा है , कभी प्रार्थना करता है , अंग्रेजों को अपना बाप कहता है । कौम को नपुंसक बना रहा है ।"[1]

रतनदेवी गांधी जी के बारे में सोहनसिंह के विचार सुनकर उसे समझाती है कि बड़े लोगों के बारे में ऐसा नहीं कहते । तभी जलसा शुरू होता है और भाषणकर्ता की आवाज आती है । भाषणकर्ता लोगों को बताता है कि अगस्त 1917 में किए गए वादों के अनुसार , ब्रिटिश हुकुमत ने कुछ नहीं किया, उलटे रौलेक्ट एक्ट पास करके सारे देश का और कौम का अपमान किया है । इसका विरोध करना हमारा फर्ज है । गांधी जी का फरमान है कि हम अपनी जायज माँगों के लिए कुबार्नियाँ देंगे। सरकार या पुलिस द्‌वारा हिंसा का मार्ग अपनाने पर भी हम उन पर हाथ नहीं उठायेंगे । तभी एक आदमी ऊँची आवाज में खबर सुनाता है कि म. गांधी पंजाब के लिए रवाना हो चुके हैं । दुनिया की कोई ताकत उन्हें रोक नहीं सकती ।

ओ'ड्वायर इर्विंग को फटकारता है कि शहर में उसकी वॉर्निंग के बावजूद भी हड़ताल और जलसा कैसे हुआ ? वह इर्विंग को लोगों के लीड़र डॉ. सत्यपाल और डॉ. किचलू को जेल में डालने को कहता है । लेकिन इर्विंग इस बात के लिए तैयार नहीं होता । वह सोचता है कि इससे स्थिति और भी बिगड़ जायेगी । तब ओ'ड्वायर कहता है-"जेल में नहीं डालते हो तो इन्हें शहर से बाहर निकाल दो । अगर ऐसे ही चलता रहा तो हालात पर हमारा कोई काबू नहीं रहेगा । इन दोनों को पकड़कर बाहर भेज दो ।"[2] प्लोमर बताता है कि लोग हिन्दूओं का रामनवमी का पर्व कौमी एकता दिवस के रूप में मना रहे हैं । इस पर्व में हिन्दू और मुसलमान शामिल हुए हैं । इर्विंग अपने बँगले पर डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल को दावतनामा देकर बुलाकर धर्मशाला भेजने की कार्रवाई करता है । गर्वनर ने शहर में फौजी दस्ते मँगवाये हैं । इर्विंग प्लोमर को पाँच हजार और बन्दूके मँगवाने को कहता है । प्लोमर और इर्विंग दोनों जानते हैं कि लोग उनके नेताओं को पकड़ने पर जुलूस निकालेंगे और पब्लिक जलसा करेंगे । लोग

---

1 भीष्म साहनी –रंग दे बसन्ती , पृष्ठ–28 ।

2 वही, पृष्ठ – 32 ।

नेताओं की रिहाई की माँग करते हुए इर्विंग के दफ्तर में या बँगले पर आ जायेंगे । प्लोमर बताता है कि इन जुलूसवालों के तीनों रास्तों पर हथियारबंद सिपाही तैनात किये जायेंगे ।पुल पर घुड़स्वार-पुलिस खड़ी कर देंगे । किले में ऑर्डर देंगे कि तौपों का मुँह शहर की ओर करें और भीड़ अगर रेल्वे-स्टेशन और किले की तरफ मुड़ जाय तो, बिना ऑर्डर के गोलीबारी की जाए । इतने में अर्दली आकर तार देता हे कि गांधी जी को पलवल स्टेशन पर उतारकर ,वापस बंबई भेजा दिया गया है । तभी स्थानीय कालिज के प्रिंसिपल, मि. वाथुर वहाँ से रामनवमी की झाँकी देखने आते हैं । वाथुर इर्विंग को समझाता है कि दबाव की नीति से बगावत की आग ठंडी नहीं पड़ेगी/ झाँकी का संचालन किश्ना करता है । कांग्रेसी कार्यकर्ता द्वारा इर्विंग को पहचाने जाने पर ब्रिटिश राष्ट्रीय गीत " God Save the King" की धून बैंड पर बजायी जाती है ।

नेता जुलूस लेकर उस पुल पर आते हैं, जिसके पार सिविल लाईन्स है । नेता जुलूस के आदमियों को समझाते हैं कि पुल पार करने के बाद तथा डिप्टी कमिश्नर के बँगले के सामने नारे नहीं लगाये जायेंगे । सिर्फ पाँच आदमियों का वफ्द डिप्टी कमिश्नर से मिलकर ,अपने नेता डॉ. किचलू और डॉ. सत्यपाल की रिहाई तथा उन पर लगायी गयी पाबन्दियाँ हटाने की माँग करेगा । लेकिन कुछ लोग गांधी जी को पंजाब में दाखिल नहीं होने दिया और डिप्टी कमिश्नर ने नेताओं को घर बुलाकर गिरफ्तार कर, बाहर भेज दिया 'इन बातों की मजम्मत करना चाहते हैं । जुलूस में से एक आदमी रौलेक्ट एक्ट को मनसुख करने की माँग पेश करना चाहता है । जुलूस आगे बढ़ने लगता है तो उस पर दो सिपाही गोलियाँ चलाते हैं । भगदड़ मचने पर नेता द्वारा धरना देकर बैठने को कहने पर भीड़ जमीन पर बैठ जाती है । दो व्यक्ती पहले भीड़ को उत्तेजित होने से रोकते हैं, फिर पुल पार करके डिप्टी कमिश्नर को समझाने जाते हैं । तभी भीड़ की ओर से दो–तीन पत्थर पुलिस पर फेंके जाते हैं। नेता भीड़ को पत्थर फेंकने से रोकते हैं । दो व्यक्ति भीड़ को शांत करना चाहते हैं तभी पुलिस गोलियों की बौछार करती हैं। कुछ लोग जख्मियों को अस्पताल ले जाने लगते हैं और डिप्टी कमिश्नर ,जिसके आदेश से गोलाबारी हुई, वहाँ से चला जाता है ।

गली में से आवाज आती है कि पुल पर निहत्थे लोगों पर पुलिस ने गोलियाँ बरसायी । बहुत–से लोग मारे गये । यह सुनकर रतनदेवी चिंतित हो जाती है क्योंकि उसका पति बाहर गया हुआ है । गली में से आयी आवाज सुनकर, रतनदेवी का भाई, अपने जीजा जी को ढूँढ़ने जाने लगता है तो रतनदेवी उसे मना करती हुई धमकाती है कि अगर वह चला गया तो वह उसका गड़ा मुर्दा देखेगा । लेकिन उसका भाई चला जाता है। गली में से आवाजें आती हैं कि बैंक को आग लगा दी । अंग्रेज मैनेजर

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

को मार डाला । बैंक को लूट रहे हैं । भाई के चले जाने पर रतनदेवी ईशरों को आवाज देकर बुलाती है । वह उसे उसके घरवाले ओर किश्ना के बारे में पूछती है । ईशरो दोनों के घर पर न होने की बात बताती है । गली में से आवाज बताती है कि नैशनल बैंक में 'आग' लगी है ।तीन अंग्रेजो को मार डाला । और भी कई जगह आग लगी है – चार्टर्ड बैंक ,एलायन्स बैंक ।रेल्वे माल गोदाम को लूट लिया है । तभी हेमराज एक जख्मी अंग्रेज औरत को लेकर आता है जिस पर गलीवाले पथराव कर रहे थे । हेमराज और रतनदेवी ,दोनों उसके जख्मों पर मरहमपट्टी लगा रहे थे तब एक अंग्रेज अफसर और दो सिपाही आते हैं।जख्मी स्त्री पर हुए हमले के लिए हेमराज को अपराधी ठहराकर ,अफसर उसे हथकड़ी लगवाकर ले जाते है । ईशरो का पति पैर में गोली लगने पर अपने घर लौटा है । वह रतनदेवी और ईशरो को धीरज बँधाते हुए हेमराज और किश्ना को ढूँढ़ने जाने की बात करता है । तभी किश्ना आकर बताता है कि हेमराज मौसा जी को पुलिस ने रिहा किया है क्योंकि जख्मी मेमसाब ने होश आने पर पुलिसवालों को बताया कि हेमराज ने उसकी जान बचायी है । किश्ना को नारेबाजी के कारण पकड़ा गया था,पर उसे भी छोड़ दिया गया है ।

इर्विंग के दफ्तर में इर्विंग ,मेसी,प्लोमर दिन–भर की घटनाओं पर विचार करते हुए कमिश्नर किरचिन का इंतजार कर रहे हैं ।किरचिन के आने पर, प्लोमर किरचिन को सिविल लाईन्स के पास पुल पर घटित घटना का ब्यौरेवार वर्णन सुनाता है ।सब कुछ सुनने के बाद किरचिन बताता है कि उसने फौजी कमान से कहा है कि शहर का प्रशासन अपने हाथ में ले ले । तभी जालन्धर फौजी डिवीजन के कमाण्डर ब्रिगेडियर जनरल डायर आकर बताता है कि उसे चीफ मार्शल लॉ एडमिनिस्ट्रेटर के तौर पर भेजा गया है । उसके खयाल से अमृतसर में बिगड़ी स्थिति को मार्शल लॉ ही बचा सकता है । वाथुर सब को समझाने की कोशिश करता है कि आंदोलनकारी शांतिपूर्ण ढंग से जलसे करते हैं तथा पुल पर जुलूसवाले लोगों पर गोलियाँ न चलायी होती,तो लोग बेकाबू न होते । सब को बिना उत्तेजित हुए,सोचना चाहिए । लेकिन उसकी बातों पर कोई गौर नहीं करता । प्लोमर डायर को बताता है कि दस लोगों को गिरफ्तार किया है पर मिस शेरवुड के हमलावारों को अभी तक पकड़ा नहीं गया है । यह सुनकर डायर गुस्से से भड़कता है । इर्विंग ने जुलूसों और जलसों की पाबन्दी लगाने के इश्तहार शहर–भर में बँटवाये हैं । जनरल डायर को जैसे ही इर्विंग बताता है कि स्थिति काबू में है,तो वह गुस्सा होकर कहता है–"कल तक वे लोग लूट–पाट कर रहे थे ,घरों को आग लगा रहे थे ,मार–काट कर रहे थे । आज वही लोग कानून के वफादार नागरिक बन गये हैं । और इसलिए हमें सिर्फ

एहतियात के तौर पर कुछ कदम उठाने चाहिए ,यही ना ? स्थिति काबू में है, क्या इसका यही मतलब है ?"[1] बाद में वह उठकर चला जाता है । इर्विंग और वाथुर दोनों बातें करते हैं । वाथुर इर्विंग को समझाता है कि सत्ता का उपयोग वहशियाना ढंग से कर लोगों पर काबू नहीं किया जाएगा । इन्सानी हमदर्दी को गौण समझने पर एक दिन सत्ता को हाथ से खोना होगा । इर्विंग गदर पार्टी से ज्यादा गांधी के आंदोलन को खतरनाक मानता हे क्योंकि वह हमारी सत्ता खत्म करना चाहता है । वह बताता है कि सत्ताधारी का परम ध्येय सत्ता को हाथ में बनाए रखना होता है । तभी इर्विंग का सेक्रेटरी आकर खबर पहुँचाता हे कि जालन्धर से पाँच हजार बन्दुके आयी है ।

जनरल डायर और ब्रिग्ज एक फौजी टुकड़ी लेकर मुनादी करवाते हैं कि शहर से कोई बाहर न जाय । शाम के आठ बजे के बाद कोई आदमी घर से बाहर नहीं निकल सकता । निकलनेवाले को गोली मारी जायेगी । कोई जुलूस या जलसा नहीं होगा । जहाँ कहीं भी चार से ज्यादा आदमी इकट्ठा होंगे ,उन्हें गैरकानूनी माना जाएगा और फौजी ताकत का इस्तेमाल किया जाएगा । इस मुनादी के बाद किश्ना छोटे बच्चों की टोली लेकर आता है और टीन का पीपा बजाते हुए शाम को साढ़े चार बजे होनेवाले जलियाँवाले बाग की मुनादी करवा कर चला जाता है । स्त्रियाँ पानी की तलाश में भटक रही हैं ।

मिस्टर लुईस मुखबिर है । भारतीय लिबास पहननेवाला मिस्टर लुईस जनरल डायर को आकर बताता है कि उसकी मुनादी का कोई फायदा नहीं हुआ और जलियाँवाले बाग में फिर से जलसा होने जा रहा है । साथ ही वह डायर को समझाता है कि उनको कम से कम आज तो पाबंदी नहीं लगानी चाहिए थी क्योंकि-" आज बैसाखी का दिन है, सर । पंजाबियों का यह बहुत बड़ा तहवार है । आज के दिन सिख पंथ की स्थापना हुई थी । यही नहीं,आज का दिन पंजाब के किसान बड़ी धूम-धाम से मनाते हैं, जब खेतों में गेहूँ पक चुका होता है ।"[2] वह डायर को जानकारी देता है कि लोग घरों में से बाहर निकलकर बच्चों को बैसाखी के मेले पर ले जायेंगे । हजारों लोग स्वर्ण-मंदिर में जायेंगे और उसके बाद सीधे जलियाँवाले बाग में पहुँचेंगे ।यह सुनकर डायर अत्यधिक खुश होता है । वह ब्रिग्ज को बताता है कि वह रास्ते में चौकियाँ बिठाते हुए बाग में जाएगा । वह अपने साथ पचास हिन्दूस्तानी और चालिस गुरखा सैनिक लेकर वहाँ जाएगा । वह अपने साथ बख्तरबन्द गाड़ियाँ भी लेते जाएगा ।

---

1 भीष्म साहनी - रंग दे बसन्ती चोला , पृष्ठ- 62 ।

2 वही, पृष्ठ - 72 ।

आवाज बताती है कि इस घटना के ठीक आठ साल बाद डायर की मृत्यु हुई । इसके पहले उसे पक्षाघात हुआ था । साथ ही पेट की अन्य बीमारियों से भी वह पीड़ित रहा । पक्षघात में ही वह चल बसा । कुछ लोगों के मतानुसार वह अपनी जिंदगी की आखरी रात तक सो न सका । लेकिन वह हमेशा दुहराता रहा कि उसने अपना फौजी फर्ज़ निभाया ।

पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर माइकल ओ'ड्वायर से आवाज पूछती है कि 13 अप्रैल को जलियाँवाले बाग के हत्याकाण्ड का फैसला ,लाहौर में 9 अप्रैल को किया गया था । इसके पहले 10 अप्रैल को अमृतसर में जानबूझकर गोलीबारी करके,मार्शल लॉं लगवाने का बहाना ढूँढ़ा था । गवर्नमेंट ऑफ इंडिया से आप को अपनी कार्यवाही के लिए पूरी छूट दी गयी थी और फौजी ताकत का पूरा इस्तेमाल करने की इज़ाजत मिली थी ताकि पंजाबी जनता को सबक मिल जाए । लेकिन ओ'ड्वायर हर बात पर चुप रहता है । ओ'ड्वायर को असली मुजरिम मानकर उसे ऊधमसिंह गोली मारता है । ऊधमसिंह को 31 जुलाई 1940 को फाँसी के तख्ते पर चढ़ाया जाता है ।

निष्कर्ष

नाटककार भीष्म साहनी की ' रंग दे बसन्ती चोला ' नाट्यकृति भारतीय स्वातंत्र्य समर की घृणास्पद घटना जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड पर आधारित है । इस ऐतिहासिक नाट्यकृति में जलियाँवाले बाग हत्याकाण्ड के पूर्व के पंजाब का वातावरण ,जलसे, हड़ताल आदि का यथार्थ वर्णन है । साथ ही ब्रिटिश शासन द्वारा किया गया दमन–नीति का व्यवहार, पुल पर के शांतिपूर्ण जुलूस पर की गयी गोलीबारी, मार्शल लॉं का लगाना,जनरल डायर की जलियाँवाले बाग के निहत्थे लोगों पर गोलीबारी ,डायर और जनरल ओ'ड्वायर की मृत्यु,ऊधमसिंह की फाँसी आदि घटनाओं का वर्णन भी इसमें पाया जाता है । किश्ना जैसे आठ–नौ साल के बच्चे का देश की खातिर जान गँवाना जैसी घटना से पंजाब में स्वतंत्रता की भावना कितनी जोर–जोश पर थी ,इसका अंदाजा आ जाता है । भारतीय और ब्रिटिश पात्रों का चरित्र–चित्रण नाट्यकार ने सफलता से किया है । तत्कालीन पंजाब के देश–काल–वातावरण का सही और यथार्थ चित्रण इसमें प्राप्त है । भाषा पात्र एवं परिस्थिति के अनुरूप भावानुसारी है । नाट्यकार ने इसकी रचना रंगमंचीय दृष्टिकोण से की है । प्रस्तुत रचना मंचीय दृष्टि से भी सफल है ।

रतनदेवी के घर में, बैसाखी के मेले से लौटी हुई स्त्रियाँ " किरकिली मेरे लाल दी ..." गीत गाते हुए नाचती हैं । फिर उसके बाद वे एक दूसरे को मेले में खरीदी ,मणियारी की चीजें दिखाती हैं । ईशरो खिड़की खोलती है तो वहाँ से जलसे की आवाज आने लगती है । जलसे में " रंग दे बसन्ती चोला" गीत गाया जाता है ,तब सब स्त्रियाँ वही गाती हुई नाचती हैं । जनरल डायर फौजी दस्ता लेकर जलियाँवाले बाग में आता है और बिना किसी सूचना के गोलियाँ बरसाता है । औरतें घबरा जाती हैं । रतनदेवी अपने पति को ढूँढ़ने बाहर निकलती है । ईशरो उसे रोकने का असफल प्रयास करती है । रतनदेवी लाशों के ढेर में से अपने पति की लाश पहचानकर उसे लिपटकर दहाड़ते हुए रोती है और लोग भी अपने सगे-संबंधियों को ढूँढ़ने आये हुए हैं । रतनदेवी को किसी के पुकारने की आवाज आती है । वह देखती है कि किश्ना मरणासन्न अवस्था में पानी माँग रहा है । वह पानी लेकर आती है लेकिन तब तक किश्ना के प्राण-पँखेरू उड़ जाते हैं । वह फिर से बिलख बिलखकर रोती हुई अपने पति की कही हुई बातें याद करती है ।रात के वक्त जनरल डायर जलियाँवाले बाग की फिर एक बार गश्त लगाता है ।

जलियाँवाले बाग के हत्याकाड़ के बाद, जनरल डायर रात को सो नहीं पाता । एक आवाज उसे इस जघन्य और घृणित कृत्य के लिए अपराधी ठहराकर कोसती हुई तरह तरह के प्रश्न पूछती है । वह उसे नींद न आने का कारण पूछती है । वह यह भी उसे सवाल करती है कि उसने गोलीबारी के पहले वॉर्निंग क्यों नहीं दी ? इसका कारण वह स्वयं ही बताती है-" जनरल डायर, 13 अप्रैल को ही, जब आप अमृतसर के लिए रवाना हो रहे थे तो आपने अपने बेटे से कहा था कि हिन्दू और मुसलमान एक हो गये हैं । देअर इज़ ए वेरी बिग शो कमिंग । बहुत बड़ा खेल-तमाशा होने जा रहा है ।इसका मतलब हुआ, आप पहले से ही इस खेल-तमाशे का फैसला करके आये थे ।"[1] वह आवाज उसे याद दिलाते हुए पूछती है कि बख्तरबंद गाड़ियाँ यदि आप जलियाँवाले बाग में ले जा सकते तो भीड़ पर मशिनगन्स भी चलाते ? डायर जवाब देता हे कि जरूर मशिनगन्स चलाता । आवाज उसे जख्मी लोगों की चिकित्सा न करने पर दोषी मानती है । लेकिन डायर के मतानुसार यह फौजी काम नहीं है । आवाज उसे स्मरण कराती हे कि दहशत फैल जाने के बाद भी उसने गली में से लोगों को रेंगते हुए चलवाया और सलाम करने को मजबूर किया । लोगों को कोड़े लगवाये । लेकिन डायर को किसी बात के लिए पछतावा नहीं है । वह बार-बार दुहराता हे कि उसने अपना फौजी फर्ज़ अदा किया ।

---

1 भीष्म साहनी - 'रंग दे बसन्ती चोला, पृष्ठ - 90 ।

समन्वित निष्कर्ष--

हिंदी साहित्य में एक कथाकार के रूप में विख्यात भीष्म साहनी ई.स. 1977 में प्रकाशित और उसी साल रंगमंचित अपने प्रथम नाटक '' हानूश '' के साथ एक नाटककार के रूप में भी पदार्पण करते हैं । ई.स. 1977 से लेकर ई.स.1996 तक उन्होंने हिंदी नाट्-साहित्य को पाँच नाटक देकर अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया है । वे एक प्रयोगधर्मी नाटककार सिद्ध होते हैं क्योंकि उन्होंने अपने हर एक नाटक में विषयवस्तु के स्तर पर प्रयोगधर्मिता को स्थान दिया है ।उनके पहले नाटक ' हानूश ' की कथावस्तु चेक लोक-कथा पर आधृत है,तो दूसरे नाटक 'कबिरा खड़ा बजार में '' की विषयवस्तु मध्ययुगीन संत कबीर के जीवन पर आधारित होने से व्यक्तिपरक है । उनकी तृतीय नाट्यकृति 'माधवी ' महाभारत की एक कथा पर आधारित होने के कारण उसकी विषयवस्तु पौराणिक है । उनकी चौथी नाट्रचना 'मुआवज़े ' आजकल शहर में हो रहे साम्प्रदायिक दंगों को लेकर है इसलिए इसकी कथावस्तु समसामयिक घटना और समस्या पर आधारित है । उनकी पाँचवी नाट्यकृति ' रंग दे बसन्ती चोला ' भारतीय स्वातंत्र्य समर की घृणास्पद घटना " जलियाँवाले बाग हत्याकाण्ड " पर आधारित होने के कारण इसकी विषयवस्तु ऐतिहासिक है । इस प्रकार हम देखते हैं कि उन्होंने अपने हर नाटक में विषय-वस्तु के स्तर पर प्रयोग किये हैं । विवेच्य सारे नाटकों में चरित्र-चित्रण और देश-काल-वातावरण का सफल चित्रण हुआ है । विवेच्य नाटकों में भाषा का सफल निर्वाह हुआ है । वे अपने हर नाटक में कोई न कोई उद्देश्य की स्थापना करने में सफल हुए हैं । 'हानूश ' नाटक में भीष्म साहनी राजसत्ता,धर्मसत्ता और व्यापारी वर्ग की नीति में सामान्य वर्ग के लोगों के कुचले जाने पर भी उनकी विजय दिखलाने के उद्देश्य में सफल हुए हैं । जेकब पलायन के कारण घड़ी का भेद जिंदा रहने से हानूश एक सामान्य कलाकार की विजय होती है । 'कबिरा खड़ा बजार में ' नाट्यरचना में नाट्यकार तत्कालीन राजनीतिक धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियों से जूझते कबीर के निर्भीक ,सत्यान्वेषी और प्रखर व्यक्तित्व को दर्शाने के उद्देश्य में सफल हुए हैं । ' माधवी ' नाटक में माधवी के जीवन कथा के माध्यम से सदियों से चली आयी नारी की स्थिति और माधवी के चले जाने से आधुनिक नारी का रूप दर्शाने के उद्देश्य में नाटककार सफल हुआ है । 'मुआवज़े ' नाट्यकृति में नाटयकार अपने इस तथ्य की ओर इंगित करने में सफल हुआ है कि दंगे के दौरान खत्म हो जानेवाली जिन्दगियों का मुआवज़ा तो हम दे सकते हैं पर मानवीय मूल्यों और नीति का मुआवज़ा हम कहाँ से दंगे ? ' रंग दे बसन्ती चोला ' इस ऐतिहासिक नाटक के जरिए राष्ट्रीयता की भावना को उजागर करने के उद्देश्य में नाटककार सफल हुआ है । उनके विवेच्य पाँचों नाटक रंगमंचीय दृष्टि से भी सफल हैं ।